बापू—मेरी माँ

"मैं तो तुम्हारी माँ बन चुका हूँ न? वैसे बाप तो बहुतोंका बन चुका, लेकिन माँ सिर्फ तुम्हारी ही बना हूँ।"

— लेखिकाको गांधीजी

मनुबहन गांधी

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर
अहमदाबाद

'अेकला चलो रे'

बापू — मेरी माँ
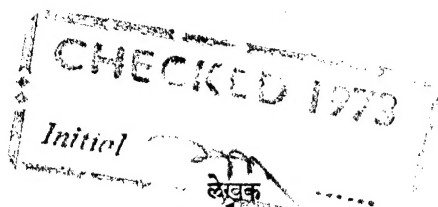
लेखक
मनुबहन गांधी

अनुवादक
कुरंगीबहन देसाओी

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर
अहमदाबाद

प्रस्तावना

कुमारी मनुबहन गाँधीके "भावनगर समाचार" में छपे हुअे करीब अेक दर्जन लेख पाठकोंको पसन्द आये बिना न रहेंगे। मैं समझता हूँ कि मनुबहनकी लेख लिखनेकी यह पहली ही कोशिश है। अिनका महत्व यह है कि यह पूज्य गाँधीजीके स्वभाव और आखरी दिनोंके कामों पर अच्छी तरहसे रोशनी डालते हैं। १९४६ के आखिरमें जबसे मनुबहन पूज्य बापूजीके साथ हुअीं तबसे अुन्होंने वहाँकी अपनी डायरी भी रखी है। जबसे नोआखालीका मिशन शुरू हुआ तबसे यह बापूजीके साथ आखिर तक रहीं। अिस वजहसे अिनकी डायरी बहुत महत्वकी होगी। और पढ़नेवाले अिसके लिखनेके लिअे मनुबहनको धन्यवाद दिये बिना नहीं रहेंगे। अिन गुजराती लेखोंका अनुवाद लेखिकाकी मित्र श्री कुरंगीबहन देसाअीने किया है।

पूज्य बापूजी खुद ही मनुबहनकी 'माँ' बने थे। अिससे पुस्तकके नामकी भी सफाअी हो जायगी।

बम्बअी, २२-१-'४९ किशोरलाल मशरूवाला

विषय-सूची

बापू—मेरी माँ

१

बा और बापूकी गोदमें

कितने ही पुत्र-पुत्रियोंके बापूजी पिता थे, कितने ही शिष्योंके गुरुदेव थे, कितने ही भाअी-बहनोंके भाअी थे, कितने ही भतीजोंके काका थे, कितनोंके वैद्य, डाक्टर और सेवक थे, कितनों ही के मित्र थे। कितने दुःखियोंके बेली और तारनहार थे। अरे, वे राष्ट्रपिता कहलाये जिसमें सब कुछ आ गया। परन्तु मेरी तो वे माता थे। साधारणतया होता तो यह है कि पुरुष माता नहीं बन सकता, क्योंकि अीश्वरने माताका जो वात्सल्यभरा हृदय स्त्रीको दिया है, वह पुरुषको नहीं दिया। यह बख्शीश सिर्फ माता — जननी — को ही दी है। लेकिन बापूने पुरुष होकर भी अीश्वरकी अिस अनोखी देनमें हिस्सा बँटाया था।

जिस तरह अेक माँ अपनी बच्चीकी परवरिश करती है, अुसी तरह बापूने मुझे पाला था। यों तो अुनके पास कअी लड़कियोंने परवरिश पाअी है, लेकिन मुझे तो वे बार बार कहा करते थे — "मैं तो तुम्हारी माँ बन चुका हूँ न! वैसे बाप तो बहुतोंका बन चुका, लेकिन माँ सिर्फ तुम्हारी ही बना हूँ।"

दुनियाका नियम है कि पिता भी अपने बच्चोंके जीवन निर्माणमें सब तरहका हिस्सा लेता है। लेकिन लड़कियोंके लिअे माँ जो काम करती है, अुसीपर सब दारमदार रहती है। आज भी जब लड़की ससुराल जाती है और यदि वह होशियार नहीं होती, तो अुसकी सास या ननँद ताने मारती है — 'क्या माँने कुछ सिखाया भी है!' कोअी बापका दोष नहीं निकालता।

१९४२ में पूज्य कस्तूरबा जब जेलमें थीं, तब मैं भी नागपुर जेलमें थी। मेरी अुमर अुस वक्त सिर्फ चौदह वर्षकी ही थी। मेरी जन्म देनेवाली माँ तो मुझे बारह सालकी छोड़कर ही

दुनियासे चल बसी थी। पर अुसके मीठे आशीर्वादसे कुछ ही समयमें मुझे कस्तूरबाकी गोद मिल गअी। बाने कभी मुझे माँकी कमी न महसूस होने दी। सन् '४२ की क्रान्तिमें जब अंग्रेज सरकारने बा-बापूको कैद कर लिया, तब मैं अुनसे बिछुड़ गयी। लेकिन किस्मतसे नौ महीनोंके नागपुर जेलके कारावासके दिनोंमें मुझे फिर अुस अलौकिक माताकी सेवा करनेका मौका मिला। मुझे फिर भाग्यसे अुस ममतालु माँकी गोद मिली, हालाँकि मुझे स्वप्नमें भी खयाल न था कि अब मैं बाके दर्शन कर पाअूँगी। मगर आदमीकी श्रद्धा बिलकुल असफल नहीं होती।

बापूके अुपवासके बाद बाको हृदय-रोग हो गया था। और अुसके बार बार हमले होते थे। अुस समय बाने कहा कि 'अगर मनुको बुलाया जा सके, तो मुझे तो वही लड़की चाहिये।' अिसी अरसेमें बाको हृदय-रोगका सख्त हमला हुआ। सुशीला बहन और डा० गिल्डरको भी मददगार नर्सकी जरूरत थी। क्योंकि ये दोनों ही बापू और बाको सँभाल रहे थे। अुन्होंने सरकारसे मेरी माँग की। सरकार तो अिस समय अुलटी थी। मेरे जैसी नादान बच्ची राजनीतिक बातें क्या समझ सकती थी जिससे अुसे यह डर लगे कि "अिसको महात्माजीके पास रखना खतरनाक है!" आखिर राजाजी और देवदास गांधीकी सर टोटनहाम और लार्ड लिनलिथगोसे अिस सम्बन्धमें गरमागरम बातें हुअीं। आखिर वे सफल हुअे और मुझे नागपुर जेलसे आगाखान महलमें भिजवाया गया। जब मुझे बापू और बाके पास जानेके लिअे कहा गया, तो बहुतोंको ताज्जुब हुआ और कअियोंको तो अीर्ष्या भी हुअी थी। लोगोंमें यह चर्चा भी चली थी कि हम अितने सालोंसे बापूके पास रहते हैं फिर हमें क्यों नहीं मौका मिला? यह बच्ची वहाँ पर बाकी क्या सेवा करेगी? लेकिन मैं जितनी श्रद्धा अीश्वर पर रखती हूँ, अुतनी ही बचपनसे बापू और बा पर रखती आअी हूँ।

अिससे पहले पूज्य बापूके अुपवासके समय जब मेरे पिताजी अुनसे मिलने जेलमें गये थे, तब बाने अुनसे मेरे हालचाल पूछे थे। अुन्होंने कहा था कि मनु बहुत कमजोर हो गअी है, अुसकी आँखें खराब हो गअी हैं।

बस तबसे बाका मातृ-हृदय अपनी बच्चीको देखनेके लिअे तरस रहा था। जब मैं आगाखान महलके दरवाजे पर पहुँची, तब बा वहीं दयाभरा चेहरा लिअे खड़ी थीं। सुपरिण्टेण्डेण्ट जेलके कायदेके अनुसार मेरा सामान जाँचे जाँचे, तब तक तो बा अितनी अधीर हो गअीं कि अुन्होंने सुपरिण्टेण्डेण्टसे कह दिया—"आप अुससे चाबी ले लीजिये और अुसे जल्दी अन्दर आ जाने दीजिये।"

अिस भावनामयी बाकी सतत सेवा करनेका सौभाग्य मुझे तेरह महीने तक मिला। पहलेकी तरह ही मेरा खाना-पीना, पढ़ना-लिखना, काम-आराम सभी बातें बाकी निगरानीमें होने लगीं। अीश्वरकी अिस दयाके लिअे मैं अुसे दिलसे प्रणाम किया करती थी। सख्त ठंढ हो या दम चलने लगे और नींद न आती हो, तब या तो बा मेरे बिछौनेमें आ जातीं, या फिर मुझे अपने बिछौने पर ले जातीं और कहतीं—"बेटी, तुम सो जाओ। दिनभर काम करते करते थक जाती हो। मुझे नींद नहीं आ रही है। अिसलिअे मैं तुम्हें अपने पास सुला रही हूँ।" और मुझे थपकियाँ दे देकर अिस तरह सुलातीं, जैसे माँ अपने छोटे बच्चेको सुलाती हो।

सन '४४ की २२ फरवरीको अीश्वरने मेरी अिस प्रेममयी माताको अुठा लिया! अुस दिन मैं तो पत्थरसी अुनके सिरके पास खड़ी हुअी आँसू बहा रही थी और अुन्हें बापूकी गोदमें सिर रखे रामधुन और गीताके पवित्र श्लोकोंका पाठ करते हुअे अिस दुनियासे सदाके लिअे विदा लेते देख रही थी। बा सबसे माफी माँग रही थीं। मुझे भी कहने लगीं—"बेटी, तुमने मेरी बहुत सेवा की है। भगवान तुम्हें खूब सुखी रखें!" मेरे पिताजीसे कहा—"अब मनुको ले जाना और पढ़ाना।" बापूसे कहा—"अब मैं जाती हूँ।" बापूकी आँखोंसे भी आँसूकी दो बूँदें टपक पड़ीं।

(मेरी १४-१५ वर्षकी अुम्रमें यदि मैंने किसीकी मृत्यु या शव या जलती चिता देखी हो, तो सबसे पहले पूज्य कस्तूरबाकी और दूसरी बापूकी! अिसे दुनियाँ कहती है कि कितनी भाग्यवान लड़की है कि

बा और बापूके साथ आखिर तक रही! मैं अभी भी तय नहीं कर सकी हूँ कि मैं भाग्यवान हूँ या भाग्यहीन!)

बाके चल बसनेके बाद थोड़े वक्तके लिअे मेरी अीश्वरके अूपर श्रद्धा कम हो गयी थी। मैं सोचने लगी थी कि "आखिर दम तक मेरी अितनी देखभाल करनेवाली माँको भगवानने क्यों अुठा लिया?" बापूने मुझे भजन गानेका कहा तो मैंने नादानीसे बापूको कहा — "अीश्वरने मेरी बाको ले लिया, अब मैं अुसका नाम भी न लूँगी।" कभी कभी अैसी नादानीका अद्भुत नतीजा निकलता है। अुसका मुझे खूब अच्छा अनुभव हुआ।

अुसी रातको, बाके अग्निदाहके बाद, बापूने मुझे अपने पास बुलाया और बाकी कअी चीजें मेरे हाथमें दीं। अुसमें अुनकी हाथीदाँतकी दो पुरानी चूड़ियाँ (जिनपर सोनेकी पट्टियाँ लगी थीं), तुलसीकी कण्ठी, अुनके सिरका नाड़ा, अुनका काममें लिया हुआ कुंकुम, पादुका वगैरा थीं। वे चीजें मेरे हाथमें रखते हुअे बापूने मुझे कहा — "देखो, बाने तुम्हारी बहुत तारीफ की है। अिसलिअे अुनकी अिन आखरी चीजोंकी मालकिन भी तुम ही हो। मैंने तुम्हें ही देनेका निश्चय किया है। अब तुम्हारा काम यह है कि जैसे भरतने रामके बदले रामकी पादुकाको गादीपर बैठाकर अुनसे प्रेरणा ली थी, वैसे ही तुम भी अिन चीजोंसे प्रेरणा लो। और बा कैसी सती थीं! अुसका सबूत यह कि अुनकी ये चूड़ियाँ मनों लकड़ियोंकी आगमेंसे भी सही-सलामत निकली हैं।*

अब यह चर्चा चली कि सरकार मुझे बापूके पास नहीं रहने देगी, क्योंकि मुझे तो बाके लिअे ही यहाँ रखा गया था। मध्यप्रान्तकी सरकारने तो मुझे कबसे छोड़ दिया था। परन्तु बा बीमार थीं अिसलिअे मैंने अुनकी सेवा करनेके लिअे आगाखान महलमें रहने देनेकी प्रार्थना की थी और वह सरकारने मंजूर की थी। अब वहाँ मेरी जरूरत नहीं थी।

---

* महाराष्ट्रके रिवाजके अनुसार हमने बाके पेटपर काँचकी हरी पाँच चूड़ियाँ, नारियल, तिल वगैरह चीजें बाँधी थीं। दूसरे दिन वे सभी चूड़ियाँ राखमेंसे अखण्ड निकली थीं। अुनमेंसे अेक आज भी मेरे पास अुस सती माताके प्रसादके रूपमें है।

अिसलिअे मेरे मनमें सवाल था कि विधाताने बासे छुड़ाया तो छुड़ाया, क्या अब बापूसे भी छुड़ायेगा! अिसलिअे मैं दुःखी हो रही थी। अेक दिन तो रातमें नींदमें चौंक चौंककर अुठने लगी। अिसलिअे अेक-दो मर्तबा तो सुशीलाबहन और बापू मेरी चारपाअी पर आये और मुझे थपथपा-कर सुला गये थे। दूसरे दिन बापूका मौनवार था। अुन्होंने बड़ी सुबह चार बजे मुझे अेक पत्र लिखा:

"चि० मनुड़ी,

तुम ठीकसे सोयीं भी नहीं! तुम्हें और प्रभावती (श्री जयप्रकाश नारायणकी पत्नी) को रखनेके बारेमें कल लम्बा पत्र तो लिखा। लेकिन रातको विचारोंके मारे नींद न आअी। आखिर प्रकाश दिखाअी दिया। यह माँग नहीं की जा सकती। अगर करें तो फिर जेल कैसी? हमें वियोग सहना ही पड़ेगा। तुम तो समझदार हो। दुःख भूल जाओ। तुम्हें तो बड़े बड़े काम करने हैं। रोना छोड़ देना। खुश दिल हो जाओ। बाहर जाकर जो सीख सको सीखना। जितनी सेवा कर ली है अुससे अब तो हर हालतमें कल्याण ही है। मुझे तुम्हारी बहुत चिन्ता रहती है। तुम्हारे जैसी तुम ही हो। भोली, सीधी और परोपकारी हो। सेवाको तुमने अपना धर्म बना लिया है। पर तुम अब भी अनपढ़ हो — और मूर्ख भी! यदि अनपढ़ रह जाओगी, तो पछताओगी। और यदि जिन्दा रहा तो मैं भी पछताअूँगा। मुझे तुम्हारे बिना अच्छा न लगेगा; लेकिन अभी तुम्हें मेरे पास रखना अच्छा नहीं लगता। क्योंकि अुसमें दोष है। वह तो मोह कहा जायगा। अब मुझे लगता है कि तुम्हें राजकोट जाना चाहिये। वहाँ तुम्हें नारणदासका सत्संग मिलेगा (नारणदास गांधी — राजकोट राष्ट्रीय शाला)। वहाँ तुम कामकी कला सीखोगी और संगीत तो सीख ही सकोगी। और बाकी जो हो सके वह सीखना। कमसे कम अेक साल तुम राजकोटमें रह लोगी, तो समझदार हो जाओगी, फिर कराची जाना या कहीं भी जाना। (कराचीमें मेरे पिताजी थे। बापूके पास आनेसे पहले मैं अुनके पास थी और अंग्रेजीकी पाँचवी क्लासमें पढ़ती थी।) कराचीमें गुरुदयाल मलिक हैं, पर वे भी अब तो वहाँ रहनेवाले नहीं हैं। अिसलिअे वहाँ तो सिर्फ पढ़ाअी ही मिलेगी। वह भी कामकी तो

है ही। ज्यादा लड़कियोंके बीच रहना भी ठीक है। पर जो तुम्हें राजकोटमें मिलेगा, वह और कहीं नहीं। ज्यादा जब मौन खुलेगा तब कहूँगा। तुम्हारी माँ मैं ही हूँ न! अितना समझ लोगी तो काफी है।

आगाखान महल, पूना, ता० २७-२-'४४ बापूके आशीर्वाद

अिस पत्रको तुम सँभाल कर रखना।"

परन्तु मेरे सद्भाग्य थे कि मैं बापूसे अलग न की गअी! बापूके साथ ही साथ मैं भी आगाखान महलसे बाहर आअी।

२

बापू माँ बने

बस, बा गअी अुस दिनसे बापूने अेक माँकी तरह अपनी १४-१५ सालकी बच्चीकी देखभाल करना शुरू कर दी। अिस अुम्रकी लड़की सहज ही माँके पास रहना पसन्द करती है और यदि पहलेसे साथ ही रहती आयी हो, तो अिस अुम्रमें वह माँके और भी ज्यादा नजदीक आना चाहती है। अिसलिअे बापूने मुझे अपने पास ही पास रखना शुरू किया। मेरे खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने, जाने-आने, बिमारी, अभ्यास, यहाँ तक कि मैं हर हफ्ते अपने बाल धोती हूँ या नहीं, अिन सब बातोंमें अुन्होंने बहुत ही सावधानी रखना शुरू किया। और यह सावधानी आखिर तक चालू रही।

बापूजी जब नोआखाली गये, तब मैं महुवे (काठियावाड़)में थी। मैंने अुन्हें लिखकर अुनके पास रहनेकी अिच्छा जाहिर की थी। अिसलिअे अुन्होंने मुझे तार करके बुलाया था। मैं बापूके पास पहुँची तब मैं साड़ी ही पहनती थी। मुझे यों तो खुले सिर फिरनेकी आदत नहीं है। पर बापूको देखते ही जब मैंने प्रणाम किया, तो मेरा सिर खुल गया था। अुसका मुझे तो खयाल तक न था, क्योंकि जैसे ही मैंने बापूकी गोदमें सिर रखा, तो अुन्होंने मेरा कान खींचकर प्रेमसे कहा — "क्यों आ गयी?" लेकिन अुसके बाद रातको (ता. १९-१२-'४६ गुरुवार,

श्रीरामपुर) बापूने मुझे कहा — "गुजराती साड़ी तो अुन सेठानियोंकि कामकी है, जिन्हें झूले पर झूलना हो और मोटरोंमें फिरना हो। फिर गुजराती साड़ी पहनो और सिर न ढँको तो अैसा बेहूदा लगता है कि आँखोंको देखना नहीं सुहाता। अगर गुजराती साड़ी पहननी ही हो, तो जैसे बा या पुराने जमानेकी औरतें पहनती थीं अुस तरह पहननी चाहिये। अुनका सिर कभी खुलता ही न था; और अगर खुलता भी तो फौरन वे सावधानीसे ढँक लिया करती थीं। अितने सावधान रहना चाहिये।" (अितनी बातें कहने पर भी मुझे खयाल नहीं आया कि बापू यह सब क्यों कह रहे हैं।) फिर कहने लगे — "मैं जानता हूँ कि साड़ी पहननेमें तुम बा और अैसी औरतोंकी तरह सावधान नहीं रह सकोगी। अिसलिअे तुम्हें यदि यहाँ रहना हो, तो जैसे आगाखान महलमें पंजाबी कपड़े पहनती थी वैसे ही यहाँ भी पहनने चाहियें। अुस वेशमें भी खुला सिर रहना अच्छा तो नहीं है। फिर भी तुम्हारे जैसी लड़कीके लिअे अुस वेषमें खुला सिर अितना बुरा या बेहूदा नहीं लगेगा, जितना गुजराती साड़ीमें। मैं तो तुम्हारी माँ बना हूँ न? अिसलिअे मुझे तो तुम्हें सब कहना ही चाहिये। तुम खुले सिर क्यों फिरती हो? आजकल तो बाल छोटे हों या बड़े, सब औरतें नकली बाल या अूनकी लम्बी चोटियाँ लगाती हैं; और फिर यदि वे सिर ढाँक लें तो वे दूसरोंको दिखें कैसे! मैं बहनोंमें रहनेवाला आदमी हूँ। बहनोंको समाजमें आगे लानेमें मेरा हाथ रहा है। अेक दिन मैंने ही बाको पारसी औरत जैसी दिखाअी देनेके लिअे मोजे, बूट और वैसे कपड़े पहनना सिखाया था। अुस बिचारीको अिन सब बातोंका कहाँ शौक था! अीश्वरने जैसे बाल दिये हों, वैसे ही रखनेमें सौन्दर्य है, नकली बालोंमें नहीं। आजकल फूलदानीमें कागजके फूल रखते हैं; मगर यदि अुन्हींके पास सच्चे फूल रखें, तो आँखोंको तो सच्चे फूल ही अच्छे लगेंगे न!"

(अिस बात परसे बापू अेकदम आध्यात्मिकता पर आ गये) बोले — "बहनोंमें अितनी कृत्रिमता आ गयी है, अिसलिअे अुन पर अत्याचार

होता है । अिस बातमें मुझे कोअी शक नहीं है। झूठे हीरामोतीके जेवर थोड़े समयके लिअे चमकेंगे और फिर काले पड़ जायेंगे। और तब नकली चीजें पहननेका शौक हो जानेके कारण अुनके जीवन भी नकली हो गये हैं। यह मैं कभी न मानूँगा कि बाहरी वेशमें जो नकली हैं, वे अन्दरसे सच्चे होंगे। अिसीलिअे बहनें आज गिर रही हैं, अुनकी बरबादी हो रही है। आज अगर अुनके हाथोंमें हथियार भी दे दिये जायँ, तो भी वे गुण्डोंका मुकाबला नहीं कर सकतीं। तब यदि बिचारी निहत्थियों पर कोअी बलात्कार करे, तो वे कैसे सामना कर सकती हैं! सीताकी मुट्ठीभर हड्डियाँ थीं, अुसके पास साधन भी नहीं था, और यदि रावण जैसा बलवान चाहता तो अुसे चिमटीसे मसल डालता, लेकिन वह अुसे छू भी नहीं सकता था। अिसका कारण क्या था? यही कि सीताकी पवित्रता अैसी प्रबल थी। आज कहाँ है अैसी पवित्रता? आज अगर कोअी स्त्री पर बलात्कार होता है, तो वह अुसके वशमें हो जाती है। यहाँ अैसे कितने ही किस्से हुअे हैं। जब गुण्डेने कहा 'शरणमें आ, नहीं तो मार डालूँगा', तो मौतके डरसे बहुतसी बहनें शरणमें चली गयीं! अिसलिअे रामयणमें वर्णन किये हुअे राम-सीता सचमुच हो गये हैं या नहीं, यदि हम अैसी शंका करें और अुसे काल्पनिक भी मानें, फिर भी यह कल्पना कितनी अूँची है, कितनी भव्य है! और अुसे आचरणमें अुतारा जा सकता है। सचमुच सीताका पात्र हर बहनके लिअे समझने जैसा है।" (नकली बाल, जेवर, कपड़ेसे बापू मुझे कहाँके कहाँ ले गये थे!) आगे कहने लगे — "और फिर आजकल नाखून और ओंठ रंगनेकी जो फैशन चल निकली है, अुसे क्या कहा जाय?" मैं हँस पड़ी और बोली — "बापूजी, आपने यदि पहले नाम सीखनेका कहा होता तो मैं सीख लेती। ओंठ रंगनेकी चीजको तो लिपस्टिक कहते हैं, पर नाखूनोंको क्या लगाया जाता है यह मैं नहीं जानती।"

"हाँ, हाँ!" बापू बोले — "बिचारी आजकलकी बहनें लिपस्टिकसे ओंठ रंगती हैं और नाखून रंगती हैं, पर अुन्हें यह देखनेकी

फ़ुरसत नहीं रहती कि खुद कितनी दुबली और फीकी हो गअी हैं ! पुराने जमानेकी औरतोंमें अितना खून रहता था कि अुनके मुँह और नाखून कुदरती तौरसे लाल रहा करते थे । हमने पश्चिमका अन्धोंकी तरह अनुकरण किया है । अुसमें दोष तो बहनों और पुरुषों दोनोंका है । लेकिन बहनोंको माफ नहीं किया जा सकता । पश्चिमकी अनुशासनमें रहना, सभ्यता, विनय, नियमितता, अुद्यमशील स्वभाव, लगनशीलता, नयी बातें सीखनेकी तमन्ना, मिलनसारी वगैरा कितनी ही बातें सीखने लायक हैं । लेकिन हमने वह सब तो छोड़ दिया और अुनके पफ–पावडरकी फैशन ले ली ! अिसीलिअे मैं तो चिल्ला चिल्लाकर कहता हूँ कि बहनें ही हिन्दुस्तानमें स्वराज्य और सुराज्य ला सकती हैं । क्योंकि मैं मानता हूँ कि जैसे बिना गृहिणीके घरकी व्यवस्था अधूरी रहती है, वैसे बिना बहनोंके देशका बन्दोबस्त भी अधूरा ही रहेगा । मगर वह तब हो सकता है, जब बहनें पवित्र हों । क्या 'पवित्र' शब्दके मेरे अर्थ तुम जानती हो ? जिसे खुदको पवित्र कहना हो, अुसमें अितने गुण तो होने चाहियें। अिन सब गुणोंका वर्णन 'पवित्र' अिन तीन अक्षरोंमें ही आ जाता है । हममें विवेक हो तभी पवित्रता आ सकती है । मैं पर्दे-घूँघटका विरोधी हूँ, लेकिन मर्यादा तो होनी ही चाहिये । स्वच्छता अन्दरकी (हृदयकी) और बाहरकी हो, तभी पवित्रता आ सकती है । सुघड़ता होने पर ही पवित्रता आ सकती है । सच्चाअी हो तभी पवित्रता आ सकती है । दम्भ या दिखावा न हो तभी पवित्रता आ सकती है । स्वमान हो तभी पवित्रता आ सकती है और सेवाकी तमन्ना हो तभी पवित्रता आ सकती है । पवित्रतामें अैसे अैसे कअी अर्थ हैं । और अिस बातमें शंका नहीं कि जहाँ पवित्रता होती है, वहाँ अीश्वरका साक्षात्कार होता है । बहनोंके पास अगर यह अेक शस्त्र आ जाय, तो अुन्हें न तलवारकी जरूरत होगी, न भालेकी । परन्तु लोहेके शस्त्रोंकी तालीमसे पवित्रताकी तालीम कहीं ज्यादा कठिन है । और समझ ली जाय तो बहुत आसान भी है ।

"देखो, अेक साड़ीमेंसे मैंने तुमको अितना बड़ा सबक सिखा दिया ! क्योंकि मैं तो तुम्हारी माँ बना हूँ न ! अिसलिअे तुम्हारे शिक्षक चाहे तुम्हारे पिता हों, या दादा, माँकी जिम्मेदारी मेरे सिर है। और जब जिम्मेदारी ली है तो अुसे पूरी करनी ही पड़ेगी। आज जो पाठ मैंने सिखाया है, अुसे तुम्हें अपने जीवनमें अुतारना है; लेकिन अुससे पहले मुझे कल डायरीमें लिखकर दिखाना, जिससे मैं समझ सकूँगा कि तुमने अितना पचा लिया है।" (अुन दिनों मैं रोजाना डायरी लिखती थी। बापू रोज अुसे देखकर सही कर देते थे।)

जब बापूने मुझे जगाया, तब रातके साढ़े बारह बजे थे। तबसे जो बातें कहना शुरू कीं, तो सवा बज गया। अिसलिअे कहने लगे — "अब तुम सो जाओ। मुझे नींद नहीं आ रही थी, अिसलिअे तुम्हें जगाया। मुझे विचार आया कि अिस लड़कीकी जिम्मेदारी लेकर जोखम अुठाया है, तो अुसको सावधान तो कर दूँ। अिसलिअे मैंने तुम्हें जगाया। अब सो जाओ।"

अैसी यह मेरी माता थी। आधी रातको अुठा अुठाकर मुझे सबक सिखाती थी !

अीश्वरने आज तो मुझसे तीनों माताओंको छीन लिया ! अेक गुजराती कवि बोटादकरने माताके सम्बन्धमें गाया है :

'गंगाना नीर तो वधे-घटे रे लोल
सरखो अे प्रेमनो प्रवाह रे;
जननीनी जोड़ सखी नहीं जड़े रे लोल।'

सचमुच अिन तीनों कतारोंका मुझे पूरा अनुभव हुआ है। और मेरी तीनों माताओंका प्रेम अुनकी आखरी साँस तक जरा भी कम नहीं हुआ !

३

गीताके गुरु

नोआखालीके अितने कामोंमें भी गीता पढ़ानेके लिअे बापू कमसे कम दस मिनट तो मुझे रोज देते ही थे ।

आगाखान महलमें अंकगणित, बीजगणित, भूमिति, भूगोल, अितिहास, विज्ञान, संस्कृत वगैरा तो बापूजीसे सीखनेका सौभाग्य मुझे मिला था, परन्तु अुन्होंने खुद मुझे अंग्रेजी कभी नहीं सिखायी । अंग्रेजी आगाखान महलके दूसरे साथी पढ़ाते थे । पूज्य कस्तूरबाकी बीमारी और समयके अभावके कारण बापूजीसे अेक अेक विषय पढ़ना छूटता गया; फिर भी बापूने संस्कृत पढ़ाना तो आखिर तक नहीं छोड़ा । यानी मेरे जीवनमें गीता पढ़ानेकी शुरूआत बापूने ही की । दूसरे विषय तो प्यारेलालजी, सुशीलाबहन, डा० गिल्डर, वगैरा दूसरे मेरे साथ रहनेवाले भाअी बहन सिखाने लगे । लेकिन "मनुको गीता तो मैं ही सिखाअूँगा" कहकर आखिर तक गीता तो मुझे बापू ही पढ़ाते रहे । अैसे दूसरे विषयोंके तो शालाके दिनोंमें और अुसके बाद भी मेरे अनेकों गुरु बने हैं, लेकिन मैं दावेके साथ कह सकती हूँ कि मेरे गीताके गुरु तो सिर्फ बापू ही रहे । अैसे दूसरोंकी थोड़ी बहुत मदद अुसमें मैंने भले ही ली हो ।

आगाखान महलमें तो गीताके शब्दोच्चार करना ही सीख पाअी थी । नोआखालीमें पहुँचनेके बाद अेक दिन तो बापूने छुट्टी मनाने दी । दूसरे दिन कहने लगे — "अब तो तुम्हें मेरे पास आये २४ घण्टे हो गये । यानी तुम पुरानी हो चुकीं । बताओ अब गीताकी पढ़ाअी कहाँ तक पहुँची है ? तुम्हें यहाँ सिर्फ मेरा काम ही नहीं करना है, बल्कि पढ़ना भी है ।"

मैंने कहा — " जेलसे छूटनेके बाद मैंने गीताकी पढ़ाअी बीच बीचमें अपने आप ही कुछ की है। पर उच्चारण सुधारनेके लिअे या अर्थ समझनेके लिअे मैंने किसीको गुरु नहीं बनाया। क्योंकि मेरी अैसी अिच्छा थी कि और विषयोंमें भले हजारों गुरु हों, लेकिन गीताका गुरु आपके सिवा दूसरा न हो। अिसलिअे मैं अपने आप ही सच्चे-झूठे उच्चारण करती और अर्थ लगाती रही हूँ, दूसरेकी मदद लेकर आगे नहीं बढ़ी।"

अिस बातसे बापू दुःखी हुअे। कहने लगे — " तुम्हारी अिस अिच्छामें झूठा मोह है। अच्छी चीज सीखनेमें हजारों क्या, लाखों गुरु भी हम क्यों न करें! अेक छोटेसे बच्चेके पाससे भी हम क्यों न सीखें? अच्छी चीज सीखनेमें शरम किसकी? मगर जब जागे तभी सबेरा समझकर आजसे ही गीताकी पढ़ाअी फिरसे शुरू कर दें। अब अुच्चारण सीखना तो तुम्हारे लिअे नहीं है; लेकिन मुझे खटकता यह है कि मैंने अभी तक तुम्हें गीताके अर्थ नहीं समझाये। अब तुम्हें रोज गीताके पाँच श्लोक लिखना होंगे। (मैं रोज श्लोक लिखती थी और बापू कितने ही काममें क्यों न हों, फिर भी मेरे लिखे श्लोक देख लेते थे और मेरी भूलें सुधारकर दस्तखत कर दिया करते थे।) जो श्लोक लिखो, अुनके अर्थ सन्धि अलग अलग करके लिखा करो। गीताका तीसरा अध्याय यज्ञके बारेमें है। गीताका अभ्यास भी अेक यज्ञ है। पर यज्ञ क्या है, यह मैं तुम्हें थोड़ा-सा बतलाता हूँ।

" भगवान कहते हैं कि यज्ञ किये बगैर जो आदमी खाता है, वह चोरीका अन्न खाता है। यह बड़ी महत्वकी बात है। चोरीका अन्न कच्चे पारे जैसा है। कच्चा पारा हजम नहीं होता। अगर वह खाया जाय, तो अंग अंगसे फूट निकलता है। वैसे ही चोरीके अन्नका असर होता है। अगर आदमी अेक क्षण भी यज्ञ किये बगैर रहे, तो वह चोर साबित होता है। यह यज्ञ हम सबको करना चाहिये। सौभाग्यसे जिसका दिल ठिकाने हो, अुसके लिअे यज्ञ आसान चीज है। अुसे न धनकी

जरूरत है, न बुद्धिकी, न पढ़ाअीकी। यज्ञ यानी कोअी भी परोपकारका काम। जिसका सारा जीवन यज्ञसे भरा हुआ हो अुसके लिअे कहा जा सकता है कि वह चोरीका अन्न नहीं खाता। जो थोड़ा थोड़ा यज्ञ करता है, वह कम चोरी करता है अैसा कहा जा सकता है। अिस दृष्टिसे सोचें तो हम सब थोड़ी बहुत चोरी तो करते ही हैं। जब स्वार्थ मात्र छोड़ दें, तब ही कहा जा सकता है कि पूरा यज्ञ हुआ। स्वार्थ छोड़ना यानी अहंपना, मेरापन छोड़ना। 'यह मेरा भाअी और वह पराया, यह मेरी बहन और वह परायी' यह भाव दिलमें रहना ही न चाहिये। यह तो वही कर सकता है, जो अपना सब कुछ भगवानको अर्पण कर सकता है। जो सेवा करता है वह अीश्वरको बीचमें रखकर अुसका सेवक बनकर ही सब काम करता है। वह आदमी सेवाभावनासे सब कुछ करता है। अैसे आदमी हमेशा सुखी रहते हैं, हमेशा शान्त रहते हैं। अुनके लिअे सुख और दुःख अेक-से होते हैं। वे अपना शरीर, मन, अकल जो कुछ भी पास हो सब परमार्थमें लगाते हैं। अैसा सच्चा यज्ञ हम सब नहीं कर सकते। अगर हमारे मनमें यह भावना हो कि बन सके तो सारे संसारकी सेवा करें, तब अैसा कौनसा काम है जिसे सारे संसारकी सेवाके लिअे बहुतसे आदमी कर सकते हों? अिस तरह सोचने पर मालूम होता है कि अैसे कामोंमें कताअी ही मुख्य है। परमार्थके खयालसे बेशुमार लोग अिस कामको कर सकते हैं। अिसलिअे कहा जा सकता है कि यह मेहनत जगतकी सेवाके लिअे की गयी और अुससे अनेकों गरीबोंका पेट भरता है। अन्धे लोग भी यह काम कर सकते हैं। और हर तारके साथ रामनाम लिया जा सकता है।

"मैं तुम्हें गीताके अर्थ अिस ढंगसे समझाना चाहता हूँ। सिर्फ व्याकरणकी दृष्टिसे नहीं। यह तो मैंने अेक अुदाहरण दिया है और यज्ञका सही अर्थ समझाया है। चरखेमें यज्ञ है और यज्ञमें चरखा है।"

४

सच्ची शिक्षा कौनसी ?

पिछले प्रकरणमें मैंने बताया अुस तरह पूज्य बापूजी मुझे पढ़ाया करते थे। फिर भी कभी कभी मैं उन्हें कहा करती थी — "आपने मेरा पढ़ना छुड़ा दिया (कराचीसे मुझे अपने पास बुलवा लिया)। मुझे तो परीक्षायें देनी थीं।" और अुस वक्त तो आजकी बहनोंकी तरह मुझे कुछ डिग्रियोंका मोह भी था। अीश्वरकी मुझ पर कितनी मेहरबानी हुअी कि उसने मुझे अुस मोहसे छुड़ा लिया! और आज मैं यह कहूँ तो अविवेक नहीं माना जायगा कि मेरे परम गुरुने मुझे जो सबक दिया, वह बी० अे०, अेम० अे० की या लन्दनकी बड़ीसे बड़ी अुपाधियोंसे नहीं मिल सकता, और अुससे मेरा जीवन सफल हो गया है। यह मेरी मान्यता है। पर यह सब अक्ल तो आज आअी है। अुस वक्त तो बापूजीको यही कहती रहती थी — "आपने मुझे पढ़ने नहीं दिया।"

बापू कहते — "पर मुझे तो तुम्हें पढ़ना और गुनना दोनों सिखाना है। अुसका क्या होगा ?"

मैं कहती — "देखिये, महादेवकाका अितने पढ़े हुअे थे तभी न आपके मन्त्री बन सके ! दूसरे भी जो बड़े बने हैं, वे डिग्री पानेके कारण ही आगे बढ़ पाये न ?" बापू हँसते और कहते — "जितने बड़े अुतने झूठे ! और तुम 'डिग्री' के बदले 'अुपाधि' शब्द अिस्तेमाल करो। 'अुपाधि' तो सचमुच अुपाधि (चिन्ता) ही है। मैं बैरिस्टर बना अुसका मुझे आज भी पश्चात्ताप होता है। और सच पूछो तो मुझे कभी खयाल तक नहीं आता कि मैं बैरिस्टर बना हुआ हूँ।

"अिसलिअे अब तो मैं अपने अनुभवके आधार पर ही दूसरोंको अुस 'अुपाधि' से बचानेकी कोशिश करता हूँ। हाँ, भाषाकी दृष्टिसे

बहुत कुछ जानना ही चाहिये। मगर आजके विश्वविद्यालयोंमें जो रट्टूपना चल रहा है और विद्यार्थी अपने खूनका पानी करते हैं, वह मुझे खटकता है। हमारे देशमें तो आज रचनात्मक कामकी जरूरत है। देहातोंमें कितना ही काम पड़ा है। विद्यार्थी पढ़नेमें अपना जितना समय लगाते हैं, यदि अुतना ही समय वे रचनात्मक कामोंमें देने लगें, तो देशकी सूरत बदल जाय। हाँ, अगर ज्ञानके लिअे पढ़ाअी हो, तो अलग बात है। तब तो यह मंत्र होना चाहिये कि ज्ञानके लिअे पढ़ाअी और पढ़ाअीके लिअे ज्ञान। लेकिन आज तो यह नजर आता है कि अिम्तहानके लिअे पढ़ाअी और पढ़ाअीके लिअे अिम्तहान। और फिर? फिर अुस ज्ञानका अुपयोग पैसे कमानेमें किया जाता है। कोअी डॉक्टर बनता है, तो कोअी वकील बनता है, और कोअी इंजिनियर बनता है! पास होते ही नौकरीकी खोज चलती है नौकरी यानी मेहनत कर करके मरो और पेट भी न भरे! आखिर हमारी सारी पढ़ाअीके पीछे ध्येय तो यही रहता है कि अच्छी से अच्छी नौकरी कैसे मिले। अिसमें अपवाद तो हो ही सकते हैं। मेरा यह कहनेका मतलब कभी नहीं है कि ४० करोड़में सबके सब यही करते हैं। पर आज पढ़ाअीके पीछे हमेशाका नियम यही है। यह तो बिलकुल गलत धारणा है कि अेक खास दर्जे तक पढ़ाअी करनेके बाद सेवा हो सकती है। किसी भी स्थितिमें आदमी सेवा तो कर ही सकता है। अीश्वरने आदमीको अितनी शक्तियाँ दी हैं कि वह सेवासे बचनेके लिअे कोअी बहाना नहीं बना सकता। यदि अैसा न हो तो आदमी अितना भयंकर है कि काम टालनेके लिअे वह कोअी न कोअी बहाना खोज ही सकता है। तुम देखोगी कि कोअी अपने पैसेसे सेवा करता होगा, तो कोअी तन्दुरुस्त शरीरसे, और कोअी अपनी बुद्धिसे। जीभ, हाथ, पाँव, आँख, कान, नाक सब अंग सेवामें काम आ सकते हैं। ये तो मैंने उदाहरण दिये हैं। अिसलिअे हमारे पास जितनी भी शक्तियाँ हों, हमें भगवानको चढ़ा देनी चाहिये। तभी हमें पूरे मार्क मिल सकते हैं।

जिसमें करोड़ रुपये देनेकी शक्ति हो और वह आधा ही करोड़ दे, तो अुसे १०० में से ५० मार्क ही मिलेंगे। लेकिन जिसके पास सिर्फ अेक पाअी देनेकी शक्ति है और यदि वह पाअी ही दे दे, तो अुसको पूरे मार्क मिलेंगे।

"व्यवहार साफ होना चाहिये। स्वार्थसे या डरसे आदमी जो कुछ करेगा, वह सेवा नहीं कही जा सकती। जहाँ भगवान पर चढ़ा देनेकी भावना है, वहाँ स्वार्थ हो ही नहीं सकता। सेवा करनेवाला अिस तरह रोज अपनी शक्ति बढ़ाता है। प्रयत्न करता है वह भी सेवा-भावसे ही करता है। अिस तरह जो सेवापरायण रहता है, अुसके हँसने खाने, पीने, खेलने, बोलने हर काममें सेवाभाव रहता है। यानी अुसके सब काम निर्दोष होंगे। अैसे भक्तोंको अीश्वर सभी जरूरी शक्तियाँ दे रखता है। अिसीलिअे नीचेके श्लोक हैं:

> अनन्यांश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
> तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥
> मच्चित्ता मद्गतप्राणाः बोधयन्तः परस्परम्।
> कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च॥
> तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्।
> ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते॥

अर्थ — जो लोग अनन्य भावसे मेरा ही चिन्तन करते हुअे मेरा भजन करते हैं, अैसे हमेशा मुझमें ही रत रहनेवालोंके योगक्षेमका भार मैं अुठाता हूँ। मतलब यह कि फलकी आशा छोड़कर मेरा काम करो। मुझमें चित्त लीन रखनेवाले, मुझ पर प्राण चढ़ा देनेवाले, अेक दूसरेको बोध करते हुअे, मेरा ही भजन करते हुअे सन्तोष और आनन्दमें रहते हैं। अिस तरह मुझमें रमे रहनेवाले और मुझे प्रेमसे भजनेवालोंको मैं ज्ञान देता हूँ, जिससे वे मुझे पाते हैं।

"अिन श्लोकोंके बारेमें जरा सोचो। अुसमें आखिरी श्लोक तो बहुत महत्वका है। अुसमें गहरी श्रद्धाका काम तो है ही। लेकिन मैं जो बात

तुम्हारे मगज़में ठँसाना चाहता हूँ, वह यह है कि अिस तरह अीश्वरका काम करनेमें तुम अपनी पाअी हुअी डिग्रियोंका कहाँ तक अुपयोग करोगी ? शायद आज तुम पढ़ती होती और कॉलेजमें जाती होती, तो कहाँ होती ? अगर मेरा वश चले तो मैं आज कॉलेजके सब लड़के लड़कियोंको देशकी अिस लड़ाअीमें लगा दूँ । सचमुच, हमारे विद्यार्थियोंके दिलोंमेंसे अगर यह डिग्रीका मोह चला जाय, तो तू देखेगी कि दुनियाके नकशे पर आज जो हिन्दुस्तान बूंद-सा है वह समुद्र-सा बन जाय । 'अपनी चादर देखकर पाँव फैलाना' यानी अपनी शक्तिके मुताबिक काम करना । यह सुन्दर कहावत सिर्फ छोटे कुटुम्ब पर ही नहीं, बल्कि बड़े देशों पर भी लागू होती है । जैसा देश हो वैसे ही अुसके रीति-रिवाज और वैसे ही कामकाज होने चाहियें । अंग्रेजोंका अन्धोंकी तरह अनुकरण करने पर हम गिरेंगे ही । हंस कौवेकी चाल चलता, तो वह मर ही जाता न ! मगर वह अपनी चालसे ही चला, अिसलिअे जीत गया । यह किस्सा तो तुम जानती हो न ? किस्से भी किस्सोंके लिअे नहीं होते । अुनमें गहरा अुपदेश भरा रहता है । हिन्दुस्तानमें अलबत्ता बहुतसे बुरे रिवाज हैं । फिर भी अगर वह अपनी चालसे ही चले, तो वह स्याम भोगे जिसकी कल्पना तक नहीं की जा सकती । क्योंकि हिन्दकी संस्कृति बेजोड़ है । मैं जैसे जैसे तुम्हें गीता समझाता जाअूँगा, वैसे वैसे अुसमेंसे नये नये अर्थ निकलते ही रहेंगे । मगर आज तो यदि अितना ही हजम कर लोगी, तो काफी है । यह सब लिख डालो । लेकिन लिखना सिर्फ लिखनेके लिअे नहीं होना चाहिये । गीताका अर्थ तो अमल करनेके लिअे है । आजका सारा पाठ गीताके आधार पर ही है ।"

मैंने बापूको जो अुलाहना दिया था कि मुझे पढ़ने न दिया, उसपर यह सारा अुपदेश मुझे दिया गया । अुसकी कीमत तो आज मैं चुका ही नहीं सकती । बापू तो अैसे दयालु थे कि अुन पर कोअी गुस्सा हो तो, अुसे वे शहदका पानी समझकर पी जाते थे । हालाँकि, बापूके सामने हमें जो चाहे सो कहने की स्वतन्त्रता थी, फिर भी अैसा कहनेमें मैंने अपनी

बालबुद्धिके कारण ही कितना अविवेक किया था, यह खयाल तो मुझे आज ही होता है। कैसी बदकिस्मती है मेरी! परन्तु पुत्र चाहे कुपुत्र हो, लेकिन माता कुमाता नहीं होती।

ये अद्भुत पाठ पढ़ानेमें अुनका क्या संकेत था, सो तो ओश्वर जाने। लेकिन अपने कामोंमेंसे छुड़वाकर भी मुझसे मेरी डायरी अवश्य लिखवाया करते थे। कहीं उनके मनमें यह तो न हो कि 'अेक सालके बाद मैं चला जाअूँगा तो'! अुन्हें यह पूर्व दृष्टि जरूर हुअी होगी, अिसीलिअे तो मेरे लिअे यह डायरी बापूका वसियतनामा बन गअी है!

५

दो डब्बोंका परिग्रह

३० मार्च, १९४७ को पूज्य बापू पहले पहल लॉर्ड माअुण्ट-बैटनसे मिलने जा रहे थे। नोआखाली और बिहारके अैक्य-यज्ञमें पड़नेके बाद यह पहला सफर था। वाअिसरायकी ओरसे सूचना तो यह थी कि बापू हवाअी जहाजसे दिल्ली पहुँचे। मगर बापूने यह कहकर हवाअी जहाजमें जानेसे अिनकार किया कि "जिस वाहनमें करोड़ों गरीब सफर नहीं कर सकते, अुसमें मैं कैसे बैठ सकता हूँ!" और निश्चय किया कि "मेरा काम तो रेलसे भी अच्छी तरह चल जाता है। मैं रेलसे ही आअूँगा।"

गर्मी बहुत थी। सहन नहीं की जा सकती थी। २४ घण्टेका रास्ता था। फिर हर स्टेशन पर राष्ट्रके परम पिताके दर्शनके लिअे हजारोंकी भीड़ जमती थी। पर बापूको अिन सब तकलीफोंकी फिकर ही कहाँ थी! अुन्होंने मुझे बुलाया और कहने लगे:

"देखो, अिस यज्ञमें तुम अकेली ही मेरे साथ हो। यज्ञमें लगनेके बाद यह पहली बार मैं दिल्ली जा रहा हूँ। नोआखाली जाते वक्त मैंने निश्चय किया था कि वहीं 'करना या मरना'; और अिसी लिअे सब

साथियोंको अलग कर दिया था। सिर्फ तुम्हें मैंने अपने यज्ञमें शामिल होने दिया। तुम साथ ही हो, अिसलिअे जैसे नोआखालीमें सबको छोड़ आया हूँ, अुसी तरह देवप्रकाश, हुनर (अेक मुस्लिम भाअी), मृदुला-बहन वगैरा जो लोग बाकी हैं, वे यहाँ रह जावेंगे। मृदुलाबहन मेरी ओरसे सब काम सँभाल लेंगी। लेकिन तुम्हें मैं नहीं छोड़ सकता, न तुम ही यह चाहती हो। अिसलिअे तुम्हें मेरे साथ आना है। सामान कमसे कम लेना, और छोटेसे छोटा तीसरे दरजेका अेक डब्बा पसन्द कर लेना। मगर देखना, अिसमें तुम्हारी कड़ी परीक्षा है, खयाल रखना!"

मैंने सामान तो कमसे कम लिया, मगर डब्बा पसन्द करते समय खयाल हुआ कि हर स्टेशन पर दर्शन करनेवालोंकी भीड़के कारण बापू घड़ीभर भी आराम नहीं ले पायेंगे। फिर हरिजन फण्ड भी मुझे गिनना पड़ेगा और अुसकी आवाज़ होगी। अिसलिअे मैंने दो भागवाला अेक डब्बा पसन्द किया। अेकमें सामान रख लिया और दूसरेमें बापूके सोने-बैठनेका अिन्तजाम कर दिया।

पटनेसे दिल्लीकी गाड़ी सुबह ९-३०को चलती थी। बापू और मैं ९-२५को स्टेशन पर आये। वहाँ लोगोंकी भीड़ बहुत थी। फिर भी हम गाड़ी पर चढ़ गये। बापू तो ठहरे मिनट मिनटका अुपयोग करनेवाले। अुन्होंने पाँच मिनटमें हरिजन फण्ड अिकट्ठा कर लिया और ९-३०को गाड़ी रवाना हुअी।

गर्मीके दिनोंमें बापू १० बजे भोजन करते थे। मैं सब तैयारियाँ करनेके लिअे डब्बेके दूसरे हिस्सेमें गयी। थोड़ी देरके बाद बापूजीके पास आयी। बापूजी लिखनेमें लगे थे। मुझे पूछने लगे — "कहाँ थी?" मैंने कहा — "यहाँ खाना तैयार कर रही थी।" तब अुन्होंने खिड़कीके बाहर नजर डालकर मुझे देखनेको कहा। मुझे भी जरा-सा खयाल हो आया कि मेरी कुछ न कुछ भूल हो गअी है। मैंने बाहर देखा, तो मुझे लोग लटके हुअे दिखाअी दिये।

मीठी-सी झिड़की देकर बापू मुझे कहने लगे — "क्या अिस दूसरे कमरेके लिअे तुमने कहा था ?" मैंने कहा — "जी हाँ । मेरा खयाल था कि अगर अिसी कमरेमें मैं अपना काम करूँ, बरतन मलूँ, स्टोवपर दूध गरम करूँ, तो आपको तकलीफ होगी। अिसलिअे मैंने दो कमरेका डब्बा लिया ।"

बापूजी कहने लगे — "कितनी कमजोर दलील है! अिसीका नाम है अन्धा प्रेम । तुम जानती हो न कि मेरी तकलीफ बचानेके लिअे हवाअी जहाजका अुपयोग करनेसे अिनकार करनेके बाद स्पेशल रेलगाड़ीसे सफर करनेकी सूचना की गअी थी । लेकिन अेक स्पेशल ट्रेनके पीछे कितनी गाड़ियाँ रुकें और हजारोंका खर्च हो जाय ? यह मुझसे कैसे सहा जाय ? मैं तो बड़ा लोभी हूँ । आज तो तुमने सिर्फ दूसरा कमरा ही माँगा, लेकिन अगर सलून भी माँगतीं तो वह भी तुम्हें मिल जाता । मगर क्या यह तुम्हें शोभा देता ? तुम्हारा यह दूसरा कमरा माँगना सलून माँगनेके बराबर है । मैं जानता हूँ कि तुम मेरे प्रति अत्यन्त प्रेमकी वजहसे ही यह सब कुछ करती हो। लेकिन मुझे तो तुम्हें अूपर चढ़ाना है, नीचे नहीं गिराना है। तुम्हें भी यह समझ लेना चाहिये । और अगर तुम समझती हो तो मैं अिधर कह रहा हूँ और अुधर तुम्हारी आँखोंसे पानी बह रहा है, वह नहीं बहना चाहिये । अब अिन सब बातोंका प्रायश्चित्त यही है कि तुम सब सामान अिस कमरेमें ले लो, और अगले स्टेशन पर स्टेशन मास्टरको मेरे पास बुलाना ।"

मैं तो थर थर काँप रही थी। सामान तो हटाया, मगर मुझे बापूकी तो फिकर बनी ही रही कि अब क्या होगा ? कैसे होगा ? दूसरे, यह भी फिकर थी कि कअी बार बापू दूसरोंकी अैसी छोटी भूलोंको अपनी ही समझकर अुनके लिअे अुपवास करते हैं; वैसे कहीं अिसके लिअे भी अेकाध बारका भोजन न छोड़ दें। अिसके अलावा घरके सब काम — पढ़ना, लिखना, मिट्टीका लेप लगाना, कातना, मुझे पढ़ाना — जैसे घरमें वैसे ही ट्रेनमें भी होते थे !

आखिर स्टेशन आया। बापूने स्टेशन मास्टरको बुलवाया और कहने लगे — "यह लड़की मेरी पोती है। बेचारी भोलीभाली है। शायद वह अभी मुझे समझी नहीं, अिसी लिअे अुसने दो कमरे पसन्द किये। अिसमें अिसका दोष नहीं। दोष मेरा ही है। क्योंकि मेरे शिक्षणमें ही कुछ अधूरापन रह गया होगा। अब अुसका प्रायश्चित्त तो हम दोनोंको करना ही रहा। हमने दूसरा कमरा खाली कर दिया है। जो लोग गाड़ी पर लटक रहे हैं, अुनके लिअे अिस कमरेका अुपयोग कीजिये। तभी मेरा दुःख कम होगा।"

स्टेशन मास्टरने बहुत मिन्नतें कीं। पर बापूजी कहाँ माननेवाले थे! स्टेशन मास्टरने तो यहाँ तक कहा कि अुन लोगोंके लिअे मैं दूसरा डब्बा जुड़वा देता हूँ। बापूने कहा — "हाँ, दूसरा डब्बा तो जुड़वा ही दीजिये, मगर अिस कमरेको भी अिस्तेमाल कीजिये। जिस चीजकी हमें जरूरत न हो और वह ज्यादा मिल सकती हो, तो भी अुसका अुपयोग करनेमें हिंसा है। मिलती हुअी सहूलियतोंका दुरुपयोग करवाकर क्या आप अिस लड़कीको बिगाड़ना चाहते हैं?" बेचारे स्टेशन मास्टर शरमिन्दा हो गये। अुन्हें बापूका कहना मानना पड़ा।

बापू तो सारे हिन्दुस्तानके पिता ठहरे। वे आरामसे बैठें और अुनके बच्चे लटकते हुअे सफर करें, यह अुनसे कैसे सहा जाता! अिससे लटकते हुअे लोगोंको जगह मिली और मुझे जीवनका यह अमूल्य सबक मिला कि जो सहूलियतें मिल सकती हैं, अुनमेंसे भी कमसे-कम अपने अुपयोगमें लेनी चाहियें। अुस समय वह झिड़की कड़ी तो मालूम हुअी थी, मगर आज मेरे जीवनमें अुसकी कीमत लगाअी नहीं जा सकती। बापूने अैसे बारीकी भरे अहिंसा-पालनसे ही अपने जीवनको गढ़ा था। और अुसमेंसे जो थोड़ा भी फायदा अुठानेका मौका मुझे मिला, वह सारी अुम्र मेरे साथ रहेगा।

६

अनियमितता गुनाह है

नोआखालीमें पूज्य बापूकी अेक गाँवसे दूसरे गाँवकी रोजानाकी पैदल यात्रा बराबर सात बजे शुरू होती थी। सातसे दो मिनट भी अगर ज्यादा हो जाते, तो बापूजीको बहुत बुरा लगता था। अेक दिन मुझे सामान बाँधनेमें थोड़ी देर हो गयी। क्योंकि कअी चीजें अैसी थीं, जो बापूके अुठनेके बाद ही बाँधी जा सकती थीं। अुन्हें रखनेमें पाँच मिनट लग गये। अिसलिअे बापूजी मुझे कहने लगे — "देखो, बाहर कीर्तनवाले और गाँवके लोग कबसे आकर खड़े हुअे हैं और तुम्हें अभी भी देर है! ये तो तुमने पाँचसौ आदमियोंके पाँच मिनट चुरा लिये। यह कैसे चल सकता है! मैं तो जाता हूँ, तुम पीछेसे आना। अितना समय फिजूल गया, यह मुझे जरा भी पसन्द नहीं। और मैं जा रहा हूँ अिससे यह न समझना कि अगर अिस तरह रोज देर हुअी, तो तुम हमेशा पीछेसे आ सकोगी। अिस खयालसे तुम पीछे रह सकती हो कि मैं बूढ़ा हूँ और तुम बच्ची हो, अिसलिअे दौड़कर मुझे रास्तेमें पकड़ लोगी। मगर यह गुनाह है। अिसलिअे हमेशा नियमित रहना चाहिये, सब काम समय पर होना ही चाहिये। किसीसे कहा गया हो कि 'मैं सात बजे निकलूँगा ही, और अगर सातसे दो सेकण्ड भी ज्यादा हो जायँ, तो वह मुझे चुभता है।"

७

पत्थर भूलनेका सबक

नोआखालीमें नारायणपुर नामका अेक गाँव है। रोजकी तरह वहाँ बापू सात बजे पहुँचे। अेक गरीब जुलाहेके घर पर हम ठहरे। गाँवमें जाते ही हमेशा बापूजी गरम पानीसे पैर धुलवाते और फिर थोड़ा बहुत अपना लिखने वगैराका काम करते थे। अुतनी देरमें मैं अुनकी मालिश और नहानेकी तैयारी कर लेती थी। अुस दिन भी मैंने अुसी तरह तैयारी की। बापू नहाते समय साबुन कभी नहीं वापरते, लेकिन अेक खरदरा पत्थर काममें लेते थे। वह पत्थर कअी साल पहले मीराबहनने अुन्हें दिया था। मैं अुसे पिछले गाँवमें भूल आयी। स्नान-घरमें जब मैंने बापूकी सब चीजें रखीं, तब मुझे अुसकी याद आयी। मैंने बापूसे कहा — "बापूजी, आपका पत्थर मैं कहीं भूल आयी हूँ। शायद कल अुस जुलाहेके घरमें रह गया होगा। अब क्या करूँ?" बापू थोड़ी देर सोचते रहे। फिर बोले — "तुमने भूल तो की। अब मैं चाहता हूँ कि तुम खुद ही जाओ और अुस पत्थरको ढूँढ़ कर ले आओ। निर्मलबाबूसे कह दो। वे मेरा भोजन बना लेंगे। लेकिन पत्थर ढूँढ़ने तो तुम्हें अकेली ही जाना होगा। अेक बार अैसा करोगी, तो दूसरे समय तुम्हें याद रहेगी।"

मैंने डरते डरते पूछा — "क्यों बापूजी अिस गाँवमें अितने स्वयंसेवक हैं, क्या अुनमेंसे किसीको साथ ले जाअूँ?" बापूने प्रश्न किया — "क्यों?" अिसका जवाब मैं न दे सकी।

नोआखालीमें नारियल और सुपारीके अितने गहरे जंगल हैं कि अनजान आदमी तो अुनमें रास्ता ही भूल जाय। फिर, कौमी तूफानके दिन ठहरे। अुस रास्ते पर सब मुसलमानोंके ही घर थे, और रास्ता बिलकुल वीरान और अुजाड़ था। तब अकेले कैसे जाया जा सकता था! मगर भूल जो हुअी थी। बगैर गये चारा न था। अिसलिअे मैं तो बापूके 'क्यों?' का जवाब दिये बगैर ही कुछ गुस्सेमें चल दी। दिलमें यह भी डर था कि

कहींसे कोअी गुण्डे आकर झूम पड़े तो! लेकिन रामनाम लेते लेते जिस रास्ते हम आये थे, अुसी पर पैरोंके निशान देखते देखते मैं चलती रही।

किसी तरह अुस जुलाहेका घर मिला तो सही। अुस घरमें सिर्फ अेक बुढ़िया ही रहती थी। अुस बुढ़ियाको क्या मालूम कि वह पत्थर अितना कीमती होगा! अुस बेचारीने तो अुसे फेंक दिया था। मैंने किसी तरह बड़ी मुश्किलसे अुसे ढूँढा। जब वह मिला तो मेरे आनन्दका पार न रहा। अुसे लेकर तुरत नारायणपुरका रास्ता लिया। सुबह साढ़े नौकी निकली हुअी दोपहरको अेक बजे नारायणपुर लौटी। भूख तो जोरोंसे लगी थी। लेकिन अिससे भी ज्यादा दुःख अिस बातका था कि अितनी भूलसे थोड़ी देर बापूकी सेवा नहीं कर पायी। अिसलिअे बापूको पत्थर देते हुअे मुझे रोना आ गया।

बापू मुझे कहने लगे — "देखो, आज तुम्हारी परीक्षा हुअी। अीश्वर जो करता है, वह भलेके लिअे ही करता है। याद है न? तुम जब पहले दिन मेरे पास आयीं, तब ही मैंने रातके दो बजे तक तुम्हें समझाया था कि मेरी यात्राके यज्ञमें शामिल होना बहुत ही हिम्मतका काम है। जरा भी हिम्मत हारोगी, तो नापास कर दूँगा। अिसलिअे अगर चाहती हो, तो अब भी लौट कर महुवा जा सकती हो। लेकिन यात्रा शुरू होनेके बाद कहीं न जा सकोगी। अिस पत्थरके निमित्त आज तुम्हारी पहली परीक्षा हुअी। अुसमें तुम पास हुअी अिससे मुझे कितनी खुशी हो रही है! यह पत्थर मेरा पच्चीस सालका साथी है। मैं जेलमें, महलमें जहाँ भी जाता हूँ, यह पत्थर मेरे साथ ही रहता है। अगर वह गुम हो जाता, तो मुझे और मीराबहनको बहुत दुःख होता। और तुम भी आज अेक पाठ सीख गअी कि 'अैसे बहुतसे पत्थर मिल जायँगे, दूसरा ढूँढ लेंगे,' अिस खयालसे बेपरवाह नहीं होना चाहिये; लेकिन कामकी हर चीजको सँभालना सीखना चाहिये।"

मैंने कहा — "लेकिन बापूजी, अगर कभी मैंने सच्चे हृदयसे रामनाम लिया हो, तो आज ही। अुस बीहड़ रास्तेमें जाते जाते दिल काँपता था!"

बापू हँस दिये और बोले — "हाँ, दुःखमें ही रामकी याद आती है।"

८

बापूका लोभ

अेक बार बापूके लिअे सुबह पीनेका पानी गरम करनेमें देर हो गयी। वहाँकी हवामें बहुत नमी होनेसे चूल्हा नहीं सुलग रहा था। अिसलिअे मैंने अपनी अेक साड़ीकी किनार फाड़कर मिट्टीके तेलमें भिगोअी। बापूने पीछेसे यह देख लिया। मुझसे बोले — "जरा यह चिन्दी दिखाना मुझे।" मैंने बताअी। अुसे अुन्होंने खोला और कहने लगे — "अजी वाह! यह तो नाड़ीके लायक चिन्दी है। अिसे जलाया कैसे जाय? अिसे धोकर सुखा दो। क्या नाड़ी बनने जैसी चिन्दी चूल्हा सुलगानेके काममें ली जा सकती है? मैं कितना लोभी हूँ, क्या तुम जानती हो? गरम पानी अगर जरा देरसे मिलेगा तो क्या हुआ? अिस चिन्दीने अितना सारा तेल पी लिया! और कहीं अिस चिन्दी पर मेरा ध्यान न होता, तो यह जल ही जाती न!"

मैंने कहा — "बापूजी, अब यह लोभ क्यों किया जाय?" अुन्होंने मजाक अुड़ाते हुअे कहा — "हाँ, तुम तो अुदार बापकी बेटी ठहरीं। लेकिन मेरे थोड़े ही बाप बैठे हैं, जो मुझे तुम्हारी ही तरह मिल जायगा?" अितना कहकर अेकदम गम्भीर हो गये और बोले — "देखो, मेरे मजाकमें भी हमेशा बड़ा गम्भीर अर्थ रहता है। यदि वह परखना तुम्हें आ जायगा, तो मेरे लिअे काफी है।"

आखिर जब वह चिन्दी सूखी और अुसका नाड़ीके रूपमें मुझसे अुपयोग करवाया, तब कहीं बापूको सन्तोष हुआ। और पासमें जो घास-फूँस था, अुससे चूल्हा जलाना भी मुझे अुस वक्त सिखाया।

देशकी महान समस्याओंमें अुलझे रहकर भी बापूको अैसी छोटी छोटी बातें सिखानेमें बड़ा आनन्द आता था।

९

कहनेसे करना अच्छा

बापू हमेशा सफाओीका बहुत ध्यान रखा करते थे। बाहरकी सफाअी तो वे चाहते ही थे, मगर अन्दरकी सफाअी भी अुनके कामोंका अेक खास अंग रहती थी। यदि कोअी काम सफाअीसे न हुआ हो, तो बार बार टोकनेके बजाय वे अपने हाथसे करके सामने वालेको सफाअीका सबक सिखाते थे।

नोआखालीके रास्ते तो सँकरी पगडण्डियाँ थीं। अुनमें कोअी तो अितनी सँकरी होतीं कि मैं भी बापूके साथ नहीं चल सकती थी। अकेले बापूजीको ही चलना पड़ता था। मेरा सहारा न मिलनेके कारण अेक हाथमें अुन्हें सहारेके लिअे लाठी रखनी पड़ती थी। रास्तोंमें जहाँ तहाँ थूँक, मलमूत्र वगैरा गन्दगी दिखाअी देती, तो बापूको बहुत दर्द होता था। अुसके बीच हमें नंगे पैर चलना पड़ता था।

अेक दिन आसपासके सूखे पत्ते लेकर बापू पगडण्डी पर पड़ा हुआ मैला अपने हाथों साफ करने लगे। गाँवके लोग देखते ही रह गये। मैं जरा पीछे चल रही थी। जब मैंने देखा, तो मैं भी हैरान हो गअी। मैंने गुस्सेसे कहा — "बापू, आप मुझे क्यों शरमा रहे हैं! मैं पीछे ही थी, फिर भी आपने मुझे न कहकर खुद ही क्यों साफ कर लिया!"

अिसके जवाबमें बापू हँसे और कहने लगे — "तुम कहाँ जानती हो कि मुझे अिन कामोंमें कितना आनन्द आता है! मैं तुम्हें कहूँ अुसके बजाय यदि खुद ही कर डालूँ, तो अुसमें मुझे कितनी कम तकलीफ हो!" मैंने कहा — "मगर गाँवके लोग जो देख रहे हैं!" बापूने कहा — "देखना, कलसे मुझे अिस तरह गन्दे रास्ते साफ न करने पड़ेंगे। क्योंकि आजके प्रसंगसे अिन लोगोंको सबक मिलेगा कि यह काम भी कोअी हलका नहीं है। अितने पर भी अगर मेरे ही खातिर ये लोग सफाअीका काम करेंगे, तो अुससे भी मुझे दुःख होगा।"

अिसपर मैंने पूछा — "मान लीजिये, कलका दिन गाँववाले रास्ता साफ करें और फिर वैसा ही रहने दें, तो आप क्या करेंगे?" अिस पर तो अुलटे अुन्होंने मुझे ही फाँद लिया। बोले — "तो मैं तुम्हें देखनेके लिअे भेजूँगा। और अगर रास्ता अिसी तरह गन्दा हुआ, तो मैं फिर साफ करनेके लिअे यहाँ आअूँगा। मेरा काम तो यही है कि गन्देको साफ बनाया जाय।"

सचमुच हुआ भी वैसा ही। दूसरे दिन जब मैं देखने गयी, तो फिर रास्ता अुसी तरह गन्दा था। परन्तु बापूसे कहनेके लिअे जानेके बजाय मैंने खुद ही अुसे साफ कर दिया और फिर लौटी। वापिस जाकर मैंने बापूसे कहा — "मैं रास्ता साफ कर आअी। गाँवके लोग भी मेरे साथ शामिल हुअे थे। और आज तो अुन्होंने वचन दिया है कि कलसे हम अपने आप ही साफ कर लेंगे। आपके यहाँ आनेकी जरूरत नहीं है।" बापूजी कहने लगे — "अरे, यह तो मेरा पुण्य तुमने ले लिया। यह रास्ता तो मुझे ही साफ करना था। खैर, दो काम तो हुअे ही। अेक तो स्वच्छता रहेगी; और दूसरा यदि लोग अपना वचन पालेंगे, तो अुन्हें सत्यका सबक मिल जायगा।" अुसके बाद वह रास्ता हमेशा साफ रहा।

अूपरके प्रसंगका जिक्र करते हुअे तीन चार दिनके बाद बापूजीने कहा — "हमारे काठियावाड़में भी लोगोंमें रास्ते गन्दे करनेकी बहुत बुरी आदत है। तुम यह न मानने लगना कि रास्तों और गलियोंमें जहाँ-तहाँ टट्टी बैठने या थूँकनेकी आदत नोआखालीके लोगोंमें ही है। यह गन्दी आदत तो हिन्दुस्तानमें जगह जगह है। अुसमें भी काठियावाड़में तो विशेष रूपमें है। बचपनमें मेरी अिच्छा थी कि मैं अुस आदतको सुधारूँ। लेकिन किस्मतसे मैं काठियावाड़में ज्यादा समय स्थिर नहीं रह पाया। तुम्हें मुझपर गुस्सा आया, वह ठीक न था। जैसे अपने आप खाये बिना पेट नहीं भरता, अुसी तरह मुझे तो यह आदत पड़ गयी है कि जब तक मैं खुद सफाअीका काम न कर लूँ, तब तक मुझे सन्तोष नहीं होता। सफाअीके काममें मुझे बेहद आनन्द आता है।"

१०

सच्चा डाक्टर राम ही है।

नोआखालीमें आमकी नामका अेक गाँव है। वहाँ बापूजीके लिअे बकरीका दूध कहीं न मिल सका। सब तरफ तलाश करते करते जब मैं थक गयी, तब आखिर मैंने बापूको यह बात बताअी। बापूजी कहने लगे — "तो अुसमें क्या हुआ? नारियलका दूध बकरीके दूधकी जगह अच्छी तरह काम दे सकता है। और बकरीके घीके बजाय हम नारियलका ताजा तेल निकालकर खायेंगे।"

अिसके बाद नारियलका दूध और तेल निकालनेका तरीका बापूने मुझे बताया। मैंने निकालकर अुन्हें दिया। बापूजी बकरीका दूध हमेशा आठ औंस लेते थे अुसी तरह नारियलका दूध भी आठ औंस लिया। लेकिन हजम करनेमें बहुत भारी पड़ा और अुससे अुन्हें दस्त होने लगे। अिससे शाम तक अितनी कमजोरी आ गयी कि बाहरसे झोंपड़ीमें आते आते बापूको चक्कर आ गये।

जब जब बापूको चक्कर आनेवाले होते, तब तब अुनके चिह्न पहले ही दिखाअी देने लगते थे। अुन्हें बहुत ज्यादा बगासियाँ आतीं, पसीना आता, और कभी कभी वे आँखें भी फेर लेते थे। अिस तरह अुनके बगासियाँ लेनेसे चक्कर आनेकी सूचना तो मुझे पहले ही मिल चुकी थी। मगर मैं सोच रही थी कि अब बिछौना चार ही फुट तो रहा, वहाँ तक तो बापूजी पहुँच ही जायेंगे। लेकिन मेरा अन्दाज गलत निकला। और मेरे सहारे चलते चलते ही बापूजी लड़खड़ाने लगे। मैंने सावधानीसे अुनका सिर सँभाल रखा और निर्मलबाबूको जोरसे पुकारा। वे आये और हम दोनोंने मिलकर अुन्हें बिछौने पर सुला दिया। फिर मैंने सोचा — 'कहीं बापू ज्यादा बीमार हो गये, तो लोग मुझे मूर्ख कहेंगे। पासके देहातमें ही

सुशीलाबहन हैं। अुन्हें न बुलवा लूँ?' मैंने चिट्ठी लिखी और अुसे भिजवानेके लिअे निर्मलबाबूके हाथमें दी थी कि अितनेमें बापूको होश आया और मुझे पुकारा "मनुड़ी!" (बापूजी जब लाड़से बुलाते थे, तो मुझे 'मनुड़ी' कहते थे।) मैं पास गअी तो कहने लगे — "तुमने निर्मलबाबूको आवाज लगाकर बुलाया, यह मुझे बिलकुल नहीं रुचा। तुम अभी बच्ची हो, अिसलिअे मैं तुम्हें अिसके लिअे माफ तो कर सकता हूँ। परन्तु तुमसे मेरी अुम्मीद तो यही है कि तुम और कुछ न करके सिर्फ सच्चे दिलसे रामनाम लेती रहो। मैं अपने मनमें तो रामनाम ले ही रहा था। पर तुम भी निर्मलबाबूको बुलानेके बजाय रामनाम शुरू कर देतीं, तो मुझे बहुत अच्छा लगता। अब देखो यह बात सुशीलासे न कहना और न अुसे चिट्ठी लिखकर बुलाना। क्योंकि मेरा सच्चा डॉक्टर तो मेरा राम ही है। जहाँ तक अुसे मुझसे काम लेना होगा, वहाँ तक मुझे जिलायेगा, और नहीं तो अुठा लेगा।"

'सुशीलाको न बुलाना' यह सुनते ही मैं काँप अुठी और मैंने तुरत निर्मलबाबूके हाथसे चिट्ठी छीन ली। चिट्ठी फट गयी। बापूने पूछा — "क्यों, तुमने चिट्ठी लिख भी डाली थी न?" मैंने लाचारीसे मंजूर किया। तब कहने लगे — "आज तुम्हें और मुझे अीश्वरने बचा लिया। यह चिट्ठी पढ़कर सुशीला अपना काम छोड़कर मेरे पास दौड़ी आती, वह मुझे बिलकुल पसन्द न आता। मुझे तुमसे और अपने आपसे चिढ़ होती। आज मेरी कसौटी हुअी। अगर रामनामका मन्त्र मेरे दिलमें पूरा पूरा रम जायगा, तो मैं कभी बीमार होकर नहीं मरूँगा। यह नियम सिर्फ मेरे लिअे ही नहीं, सबके लिअे है। हरअेक आदमीको अपनी भूलका नतीजा भोगना ही पड़ता है। मुझे जो दुःख भोगना पड़ा, वह मेरी किसी भूलका ही परिणाम होगा। फिर भी आखरी दम तक रामनामका ही स्मरण होना चाहिये। वह भी तोतेकी तरह नहीं, बल्कि सच्चे दिलसे लिया जाना चाहिये। जैसे, रामायणमें अेक कथा है कि हनुमानजीको जब सीताजीने मोतीकी माला दी, तो अुन्होंने अुसे तोड़

डाली। क्योंकि अुन्हें देखना था कि अुसमें रामका नाम है या नहीं। यह बात सच है या नहीं, अुसकी फिकर हम क्यों करें? हमें तो अितना ही सीखना है कि हनुमानजी जैसा पहाड़ी शरीर हम अपना न भी बना सकें, फिर भी अुनके जैसी आत्मा तो जरूर बना सकते हैं। अिस अुदाहरणको यदि आदमी चाहे तो सिद्ध कर सकता है। हो सकता है, वह सिद्ध न भी कर पावे। लेकिन यदि सिद्ध करनेकी कोशिश ही करे, तो भी काफी है। गीता माताने कहा ही है कि मनुष्यको कोशिश करनी चाहिये और फल अीश्वरके हाथमें छोड़ देना चाहिये। अिसलिअे तुम्हें, मुझे और सबको कोशिश तो करनी ही चाहिये। अब तुम समझी न कि मेरी, तुम्हारी या किसीकी बीमारीमें मेरी क्या धारणा है?"

अुसी दिन अेक बीमार बहनको पत्र लिखते हुअे भी बापूने यही बात लिखी — "संसारमें अगर कोअी अचूक दवाअी हो, तो वह रामनाम है। अिस नामके रटनेवालोंको अिसका अधिकार प्राप्त करनेके सम्बन्धमें जिन जिन नियमोंका पालन करना चाहिये, अुन सबका वे पालन करें। मगर यह रामबाण अिलाज करनेकी हम सबमें योग्यता कहाँ है?" . . . (मेरी रोजकी नोआखालीकी डायरीमेंसे)

अूपरकी घटना ३० जनवरी, १९४७ के दिन घटी थी। बापूकी मृत्युसे ठीक अेक साल पहले।

अिस रामनाम परकी अुनकी यह श्रद्धा आखरी क्षण तक अचल रही। १९४७ की ३० वीं जनवरीको यह मधुर घटना घटी; और १९४८ को ३० वीं जनवरीको बापूने मुझसे कहा कि 'आखरी दमतक हमें रामनाम रटते रहना चाहिये'। अिस तरह आखरी वक्त भी दो बार बापूके मुँहसे रा . . . म रा . . . म सुनना मेरे ही भागमें बदा होगा, अिसकी मुझे क्या कल्पना थी! अीश्वरकी गति कैसी गहन है!

११

‘आजका फायदा अुठाअिये’

पूज्य बापूने अपने सब साथियोंको जबसे नोआखालीके अलग अलग गाँवोंमें बिठा दिया, तबसे अुन पर कामका बोझ बहुत बढ़ गया था। अुन्हें अपनी आफिसका काम अितना रहता कि अुसे छह आदमी भी मुश्किलसे पूरा कर सकते थे। अिन छह आदमियोंका काम अब अकेले बापू और निर्मलबाबूको ही सँभालना पड़ता था। निर्मलबाबू अकेले तो थे ही, साथ ही नये भी थे; और वह भी बंगाली और अंग्रेजी दो भाषामें ही काम कर सकते थे। अिसलिअे गुजराती, हिन्दी, मराठी वगैरा दूसरी भाषाओंका काम बापूके सिर ही रहता था। अिसके सिवा अुन्हें लोगोंसे मिलना होता था और रोजके प्रार्थना-प्रवचन अखबारोंमें ठीक ढंगसे देनेके लिअे खुद ही देखने पड़ते थे। क्योंकि संवाददाता लोग अक्सर अपने संवादोंमें अुनके प्रवचनोंको असरकारक ढंगसे रख नहीं पाते थे। कहीं अर्थका अनर्थ न हो जाय, अिसका बापू खुद ही ध्यान रखते थे।

सबसे मुश्किल काम तो रोज रोज सामान बाँधनेका और यह देखनेका था कि कहीं कोअी चीज छूट न जाय। यह भार यों था तो मेरे सिर, फिर भी बापूको चिन्ता तो रखनी ही पड़ती, जिससे मैं वक्तपर तैयार हो जाअूँ। जरा भी चैन नहीं था। यह तो सबका अनुभव है कि अेक ही गाँवमें जब कभी पाँच सात सालके बाद भी घर बदलना पड़ता है, तो हमें कितनी चिढ़ आती है। फिर यहाँ तो रोजाना बदलनेकी बात थी।

बहुतोंके मनमें सवाल होगा कि “बापूका सामान ही कितना हो सकता है!” लेकिन बात यह थी कि अपनी जरूरतकी सब चीजें बापू अपने साथ रखते थे, जिससे अुन्हें किसी पर बोझ न बनना पड़े। अुनकी जरूरी चीजोंमें कागज पेन्सिल ही नहीं, बल्कि सुअी तागेसे लेकर खाना पकानेका ‘कुकर’, पाट, बेलन, तवा, सँड़सी, चिमटा, दो

तपेली, चाकू, थाली, खानेके लिअे पत्थर या मिट्टीका कटोरा, लकड़ीका चम्मच (खाना खानेके लिअे), गिलास, नहानेके लिअे बालटी, साबुन, 'कमोड' वगैरा सब चीजें साथमें रखनेकी हमें हिदायत ही दी गयी थी। ये चीजें अिसलिअे नहीं रखी जाती थीं कि नोआखालीमें सब झोंपड़े जल गये थे और ये कहीं मिल नहीं सकती थीं; बल्कि अिसलिअे कि बापूको अपनी ही चीजोंका अुपयोग करना पसन्द था। वे बिड़लाजी जैसेके महलमें ठहरते थे, तब भी अपनी ही चीजोंका अुपयोग करना पसन्द करते थे। अिसके अलावा अुनके ऑफिसके कामकी अेक बगलझोली अैसी थी, जिसमेंसे कागजका अेक टुकड़ा भी खो जाता, तो अुनका सब काम रुक सकता था। अिस थैलीमें गीता, रामायण, बाअिबल, कुरानशरीफ, भजनावली; पंडित नेहरू, सरदार पटेल जैसोंके पत्र; डाकमें आये हुअे अैसे कागज जिन्हें लिखनेवालेने पिठकोरे छोड़ दिये हों और जिन्हें बापूने अुपयोगमें लेनेके लिअे रख छोड़ा हो और कुछ पर तो जवाब लिखना शुरू भी हो चुका हो — अैसी कितनी ही चीजें थीं। अिस कीमती थैलीकी जिम्मेदारी मुझपर थी। फिर भी बापू कहते रहते कि "अगर कुछ खो गया, तो तुम तो छूट जाओगी, पर क्या मैं भी छूट सकूँगा?" अिस वाक्यसे पाठक समझ सकेंगे कि बापूको अपनी थैलीकी कितनी फिकर रहती थी। फिर मैं यह भी नहीं कह सकती थी कि चलो, अेक गाँवमें अेक ही दिन तो निकालना है; जैसे तैसे चीजें रख ली जायँ तो क्या बिगड़ेगा? क्योंकि अचानक ही मेरी व्यवस्थाकी जाँच हो जाती थी।

नोआखालीके अिस महायज्ञमें बापूके दिलकी कितनी दुःखभरी हालत थी, यह नीचेके पत्रसे समझमें आ सकेगी:

"मैं यहाँके कामको कैसे पार लगा सकता हूँ? जहाँ देखता हूँ वहाँ आग लगी है। अीश्वरकी मेहरबानी है कि वह मुझे निभाये जा रहा है। मेरे सत्य और अहिंसा दोनों आज अैसे नाजुक काँटे पर तुल रहे हैं, जिस पर मोती तो क्या सिरके बालका सौवाँ हिस्सा भी रखें, तो अुसका भी वजन साफ मालूम हो जाय। कड़ी परीक्षा है। चारों ओर

झूठ चल रही है और बातें बढ़ा बढ़ा कर कही जा रही हैं। सत्य तो ढूँढ़े नहीं मिलता। अहिंसाके नाम पर हिंसा हो रही है, धर्मके नाम पर अधर्म हो रहा है। परन्तु मेरे सत्य और अहिंसाकी परीक्षा यहीं हो सकती है न! अिसी लिअे मैं परीक्षा देने यहाँ बैठा हूँ।"

अिस भारी बोझको पार लगानेके लिअे नोआखालीमें बापू हमेशा दो बजे रातसे अुठा करते थे। मुझे भी अुठाते थे। कड़ी ठंढमें अितनी जल्दी बिस्तरसे अुठनेमें स्वाभाविक ही मैं तो अलसा भी जाती थी। लेकिन बापू कभी नहीं अलसाते थे। अेक दिन मैंने मजाकमें बापूसे कहा — "बापूजी! अगर आज रातको घड़ी देखनेमें भूल हो जाय, या फिर आपकी नींद ही देरसे खुले तो मैं प्रसाद बाटूँ।"

बापू हँस दिये और कहने लगे — "भगवान कहाँ तुम्हारे जैसा लालची है?" और हुआ भी यही। जैसे भगवानको भी मेरे प्रसादकी जरूरत न हो! दूसरे दिन दो बजे और बापू मेरे सिर पर मीठी-सी चपत लगाते हुअे कहने लगे — "मनुड़ी अुठो न! देखो, तुम्हारे भगवानको तुम्हारे प्रसादका लालच नहीं हुआ न!" और मुझे लालटेन जलानेके लिअे कहा।

बापू रातको सोते समय लालटेन बुझवा देते थे। अिसपर मैंने कहा — "क्यों बापू, हम रातको ११ बजे सोते हैं और दो बजे तो अुठ जाते हैं। तब फिर लालटेन धीमे धीमे जलता रहे, तो अुसमें क्या हर्ज है?" तो बोले — "तुम्हारी बात तो ठीक है, लेकिन मुझे अुतना घासतेल कौन देगा? न तुम कमाअी करती हो, न मैं! हाँ, तुम्हारे पिता महुवामें कमा रहे हैं, अिसी लिअे तुम्हें अैसी बातें सूझ सकती हैं। लेकिन तुम्हें पता है कि लालटेन बुझवानेसे मेरे दो काम होते हैं? अेक तो यह कि लालटेन जलानेमें तुम्हारी नींद अुड़ जाती है, जिससे अगर मुझे कुछ लिखवाना हो, तो तुम बगैर झोंके खाये लिख सकती हो; और घासतेल तो बच ही जाता है। अैसे मेरे तो 'अेक पन्थ और दो काज' हो जाते हैं।"

फिर कहने लगे — "क्या तुम 'अेक पन्थ दो काज'का अर्थ समझती हो?" मैंने अपना साधारण अर्थ कहा, लेकिन बापूने तो अलग ही अर्थ बताया — "अेक पन्थ दो काज, यानी अैसा कौनसा पन्थ है, जिसे अख्तियार करनेसे हमेशा दो काम हो सकते हों? दो कामसे यह न समझा जाय कि सिर्फ दो ही काम, मगर अनेक काम — सौ भी हो सकते हैं। अिसलिअे हमें अैसा रास्ता खोजना चाहिये, जिससे बहुतसे काम हों। यहाँ नोआखालीमें हजारों आदमी बरबाद हो गये। अिस परसे हमें खयाल आ सकता है कि हमें अेक मिनट भी गँवाना नहीं चाहिये। शरीरको जरूरत हो अुतनी ही नींद ली जाय, अुतनी ही खुराक ली जाय। हमें सब सीमित कर देना चाहिये। क्योंकि भजनमें कहा है: 'आजनो लहावो लीजिअे रे, काल कोणे दीठी छे' — हमें आजका फायदा अुठाना चाहिये; कल क्या होगा यह कौन जानता है? मैं तुम्हें अिस वक्त, रातको दो बजे, ये बातें समझा रहा हूँ, और अीश्वरको मुझे या तुम्हें अिसी समय अुठा लेना हो तो अुठा ले। यह बात अीश्वरने अपने ही हाथमें रखी है। अिसलिअे यह कहावत बहुत समझने लायक है।

"तब वह सुनहला काम कौनसा है, जिसे करनेसे अनेक काम हो सकें? वह काम तो अेक ही है, और वह है परोपकार। परोपकार यानी पड़ोसीकी सेवा। और वही है ईश्वर-भक्ति। लेकिन भक्ति सिर्फ माला फेरनेसे अथवा तिलक करनेसे नहीं होती। तिलक करके यदि हम छूरे भोंकते फिरें, तो वह तो ढोंग होगा। पर नरसिंह भगतने कहा है कि भक्ति तो सिरके बदलेमें ही मिलती है। यह भक्ति या परोपकार अगर तुमसे शरीरसे न हो सके, तो मनसे तो करना ही चाहिये। अुठते-बैठते, खाते-पीते, खेलते-कूदते मनसे जगतके कल्याणकी अिच्छा करनी चाहिये और हमारे हाथमें जो सेवाका काम आवे, अुसे करते रहना चाहिये। यदि तुम अितना समझ लोगी, तो बहुत सीख सकोगी। अैसे गूढ़ अर्थ भरे पड़े हैं हमारी कहावतोंमें। देखो, मैंने तो छोटेसे घासतेलके मजाकमें तुम्हें अेक सबक सिखा दिया।"

अिन महान गुरुने यह गम्भीर पाठ रातके दो बजे, कुदरतकी नीरव शान्तिमें बिलकुल धीमे धीमे स्वरमें मुझे करीब २० मिनट तक पढ़ाया। अितने पर भी बोलते समय अुन्हें पूरा खयाल था कि अुनकी आवाजसे किसीकी नींदमें खलल न आ जाय।

१२

'अेकलो जाने रे'

नोआखालीमें झोंपड़े मिट्टीके और नारियल्के पत्तोंके बने होते हैं। पक्के मकान कम हैं। जो कुछ थे वे भी नोआखाली हत्याकाण्डके दिनोंमें जला दिये गये।

श्रीरामपुर गाँवमें बापूजीका मुख्य निवासस्थान था। हमारा घर भी मिट्टीका था और अुसपर पत्तोंका छप्पर था। हमारे यहाँ गुजरातमें भी किसानोंके अैसे ही झोंपड़े दिखाओी देते हैं। लेकिन श्रीरामपुरके अिस झोंपड़ेमें साथियोंने अितनी व्यवस्था कर दी थी कि जिससे अुसमें रहा जा सके। लेकिन जब बापूने पैदल यात्राका निश्चय किया, तब तो सबको चिन्ता होने लगी। क्योंकि अेक तो रोज रोज नये गाँवोंमें रहना था; अुसमें भी गाँवोंके कितने ही झोंपड़े तो जला दिये गये थे। वहाँ हवामें भी काफी नमी थी। बारिश भी होती तो मुसलधार। अिस हालतमें झाड़ोंके नीचे तो कैसे रहा जा सकता था? सबको यही चिन्ता थी कि बापू रहेंगे कहाँ? विशेष फिकर तो सतीशबाबूको थी, क्योंकि अुनपर यात्राकी सारी व्यवस्था करनेका भार था। लेकिन वे तो बहुत ही विद्वान और बुद्धिशाली ठहरे। अुन्होंने तरकीब करके तुरत अेक चलती फिरती झोंपड़ी (folding hut) तैयार कर ली। अुसमें खिड़की, दरवाजा, मेरे और बापूके सोनेके लिअे दो हलकी चारपाअियाँ, जमीन पर बिछानेके लिअे घास और चटाओी, जिससे जमीन कितनी ही अूबड़-खाबड़ क्यों न हो तो भी किसी तरहकी तकलीफ न मालूम

पड़े — सबका सुभीता था । अुसमें पीछे नहानेका अेक कमरा भी था । अैसी कलामय चीज अुन्होंने बनाअी । बापूजी अितना जानते थे कि सतीशबाबू झोंपड़ी तैयार कर रहे हैं । मगर यह नहीं मालूम था कि वह झोंपड़ी अैसी होगी, जिसे आगे जाकर वे 'महल जैसी झोंपड़ी' कहेंगे ।

यों तो बापू श्रीरामपुर रहते थे, लेकिन अुनकी यात्रा चण्डीपुरसे शुरू हुअी, जो श्रीरामपुरसे दो मील पर है । अिसका कारण यह था कि जिस गाँवमें बहुत नुकसान हुआ था, वह चण्डीपुरसे कुछ नजदीक था । अगर यात्रा श्रीरामपुरसे शुरू करते, तो बापूको अेक साथ अेक दिनमें सात आठ मील चलना पड़ता । वह अुनके लिअे बहुत श्रम हो जाता । अिसलिअे चण्डीपुर अेक रात ठहरनेके बाद आगे बढ़े । वैसे चण्डीपुरमें भी थोड़ा बहुत नुकसान तो हुआ ही था ।

बापूकी नोआखालीकी सच्ची यात्रा चण्डीपुरसे शुरू हुअी । अुस दिन चलनेके पहले कअी बहनोंने बापूको तिलक किया और सबने प्रार्थना की । बापूकी सूचना थी कि अुस दिन 'वैष्णव जन तो तेने कहिअे' भजन गाया जाय । (यह भजन कभी प्रसंगसे ही गाया जाता था, हमेशा नहीं ।) लेकिन अुसमें अितना फर्क कर लिया जाय कि हर कड़ी पर सिलसिलेसे 'वैष्णव जन'की जगह अेक अेक बार 'मुस्लिम जन', 'खिस्ती जन', 'शीख जन', 'पारसी जन', 'हरिना जन' रखा जाय । अुन्होंने खुद भी गानेमें सुर मिलाया था ।

चण्डीपुरसे बापूने चप्पल पहनना भी छोड़ दिया । अुसका कारण बापू यह बतलाते थे कि "हम जब मन्दिर, मसजिद, या चर्चमें जाते हैं तो चप्पल अुतार देते हैं । यानी पवित्र जगहमें हम चप्पल नहीं पहनते । तब मैं तो दरिद्रनारायणके पास जा रहा हूँ । जिनके सगे सम्बन्धी लुट गये हैं, जिनकी स्त्रियों और बच्चोंका कतल हुआ है, जिनके पास लाज ढँकनेको भी पूरे कपड़े नहीं हैं, मुझे तो अैसी जमीन पर चलना है, अैसोंकी मुलाकात लेनी है । मेरे लिअे तो यह पवित्र यात्रा है । अिसमें

चप्पल कैसे पहने जायँ!" ये शब्द कहते समय बापूके हृदयमें अिस तरह मन्थन हो रहा था, जैसे मक्खन निकालते समय मट्ठेका होता है। अुनकी वह करुण आवाज आज भी मेरे कानमें गूँजती है।

बापूके तलुवे तो हमारी हथेलीसे भी मुलायम थे। अुनमें काँटे लग गये थे और बिवाअियाँ भी पड़ गयी थीं।

चण्डीपुरसे ठीक सुबह ७-३० बजे अेक हाथ मेरे कन्धे पर रखे और दूसरे हाथमें डण्डा लिये नारियल और सुपारीके वनमें सबसे पहले कविवर टागोरका 'अेकला चलो' गीत गाते हुअे बापूने अपनी यात्रा शुरू की।

जदि तोर डाक शुने केओना आसे
तबे अेकला चलो रे!
अेकला चलो, अेकला चलो,
अेकला चलो रे! जदि०
जदि केओ कथा ना कय,
ओरे ओरे ओ अभागा,
केओ कथा ना कय,
जदि सबाओी थाके मुख फिराये
सबाओी करे भय;
तबे पराण खुले,
ओ तुअि मुख-फुटे तोर मनेर कथा
अेकला बलो रे! जदि०
जदि सबाओी फिरे जाय,
ओरे ओरे ओ अभागा,
सबाओी फिरे जाय।
जदि गहन पथे जबार काले
केओ फिरे ना चाय;
तबे पथेर-कांटा,
ओ तुअि रक्त-माखा चरण तले
अेकला दलो रे! जदि०

जदि आलो ना धरे,
ओरे ओरे ओ अभागा,
आलो ना धरे;
जदि झड़-बादले आँधार राते
दुआर देय घरे;
तबे बज्रानले,
आपन बुकेर पांजर जालिये निये,
अेकला जलो रे! जदि०

हर रोज यात्रा शुरू करनेसे पहले हम बंगालीमें यह गीत गाते थे। अुसके बाद सारे रास्ते अेकके बाद अेक भजन और रामधुन गाते हुअे जाते थे। रास्तेमें जहाँ जहाँ कतल हुआ हो या हड्डियाँ पड़ी हों, जले हुअे झोंपड़े हों, वहाँ बापू देखते जाते थे; और वह सब देखते हुअे अुनका हृदय फटा पड़ता था। अुस समय भजनोंसे ही अुन्हें शान्ति मिलती थी।

७—३० के निकले हुअे हम ९—३० को मासीमपुर पहुँचे, जहाँ सबसे ज्यादा नुकसान हुआ था। आज ७ जनवरी १९४७ का दिन था। वहाँ बापूके लिअे रहने लायक अेक भी स्थान न था। अिसलिअे सतीशबाबूका दिया हुआ चलता फिरता झोंपड़ा खड़ा किया गया। बापूने अुसमें जाकर अुसके कोने कोनेका बारीकीसे निरीक्षण किया और फिर पाट पर बैठ कर पैर धुलवाते हुअे मुझे कहने लगे — "देखो, सतीशबाबूने मेरे महलके लिअे कितनी मेहनत की है! फिर अुठानेवालेको जरा भी तकलीफ न हो, अैसे हिसाबसे कितने छोटे छोटे हिस्से कर दिये हैं! अुन्हें अेक छोटासा बच्चा भी अुठा सकता है। अुन्होंने मुझ पर कितना प्रेम बरसाया है? लेकिन अितने बड़े प्रेमका मैं अकेले ही कैसे अुपयोग करूँ? अिसलिअे मैंने तो निश्चय कर लिया है कि अिस 'महल' को हम दूसरी जगह नहीं ले जायँगे। यहीं अुसका अेक छोटासा दवाखाना बनवा देंगे, या तो अैसे ही किसी दूसरे काममें अिसका अुपयोग होगा। मैं तो अिधर अुधर जहाँ भी जगह मिलेगी, वहीं आरामसे पड़ा रहूँगा। और यदि कहीं न मिली, तो

अितने झाड़ तो हैं ही। वे हमें कहाँ मना करते हैं? वहीं आरामसे पड़े रहेंगे। जैसा रामजीको निभाना होगा निभायेंगे। हम अुसकी क्यों चिन्ता करें? गाँवोंमें जो कार्यकर्ता गये हैं, अुन्हें भी मैंने सूचना दी है कि जिस गाँवमें वे बैठें, अुसी गाँवके लोगोंको अुनका पोषण करना चाहिये — जैसे वे अपने कुटुम्बियोंका पोषण करते हैं। कार्यकर्ताको अुनका कुटुम्बी बन जाना चाहिये। यह नहीं कि 'हम भी कुछ हैं या हम तुम्हारी सेवा करने आये हैं, अिसलिअे हम तुम पर अुपकार कर रहे हैं,' अैसी भावना वे लोगोंको दिखलायें। यदि अैसा करेंगे तो निभ नहीं सकेंगे। जब वे बीमार भी पड़ें तो वहीं गाँवमें जो वैद्य-हकीम हों, अुनकी दवाओका सेवन करें। अगर कोअी न मिले तो कुदरतके पंच महाभूतोंसे जो मिले, अुसीसे संतोष करें। मैंने अपने लिअे भी यही नियम रखा है।"

दूसरे दिन बापूने अुस झोंपड़ेको साथ न लेने दिया। हम जिस गाँवमें जाते, वहीं किसी भी झोंपड़ेमें ठहरते थे। अिससे फायदा यह हुआ कि हिन्दू, मुस्लिम, जुलाहे, कुंभार, हरिजन, नाअी, किसान, ब्राह्मण, बनिये, लुहार आदि सब जातिके लोगोंके घर ठहरनेका मौका मिला। अुनमेंसे कअी तो अैसे भी थे, जिन्होंने नोआखालीके कतलमें भाग लिया था। अिससे लोगोंका हृदय-परिवर्तन हुआ और वे अैसा मानने लगे मानो बापूको अपने घर ठहरानेका मौका मिलनेसे अुन्हें अिसी लोकमें अपने पापका प्रायश्चित्त करनेका अवसर मिल गया हो! अिस तरह सब अपने घरोंको और अपने आपको पवित्र करने लगे। अितनी कठिनाअियोंके बीच भी बापू अिन लोगोंके साथ रहनेसे अिनमें ओतप्रोत होनेका सौभाग्य पाकर अपने आपको धन्य समझने लगे — अितने दुःखमें भी अुनके चेहरे पर आनन्द फूटा पड़ता था।

कितने ही लोग कहते थे कि नोआखालीमें हत्याकाण्ड भले ही हुआ हो, लेकिन अुससे हमारा देश तो बापूके चरणोंसे पवित्र हुआ!

१३

फूलहारसे स्वागत

अेक बार देवीपुर (नोआखालीका गाँव) गाँवके लोगों और कार्यकर्ताओंने बापूके स्वागतके लिअे खूब ठाटबाट किये। अुसमें करीब करीब १५०–२०० रुपअे खर्च हुअे थे। (यह हमें बादमें मालूम हुआ।) रोज तो बापू जिस गाँवमें जाते थे, वहाँकी स्त्रियाँ तिलक करके अुनका स्वागत करती थीं, और बहुत हुआ तो नारियलके पत्तोंसे अलग अलग ढंगसे गाँव सजाया जाता था। अिसमें बापूको भी अेतराज न होता, क्योंकि अिसमें पैसे तो खरचने ही नहीं पड़ते थे, सिर्फ मेहनत ही लगती थी। अपनी मेहनतसे कुछ भी किया जाय, अुसके लिअे बापू कभी नहीं रोकते थे।

पर देवीपुरमें तो लोगोंने खास चाँदपुरसे फूल-जरी, रेशमकी पट्टियाँ, लाल-पीले-हरे कागज वगैरा मोल मँगवाये थे और गाँव सजाया था। अिसके अलावा घी और तेलके दिये भी जलाये गये थे।

यह सब सजावट देखकर बापू थोड़ी देरके लिअे गम्भीर हो गये। फिर मुझे यह पता लगानेके लिअे कहा कि वहाँके कायमी कार्यकर्त्ता कौन हैं? वहाँकी आबादी कितनी है? वगैरा वगैरा। ये सब बातें जानकर मैंने बताया कि अिस गाँवमें ३०० हिन्दू और १५० मुसलमान हैं। हिन्दुओंमें ब्राह्मण, कायस्थ और शूद्र हैं।

बापूने वहाँके खास कार्यकर्त्ताको बुलाकर अुलाहना दिया और पूछा — "अिस सजावटके लिअे तुम पैसा कहाँसे लाये?" . . . भाअीने जवाब दिया — "आपके चरण हमारी भूमि पर कहाँ बार बार पड़ते हैं? अिसलिअे हम हिन्दुओंमेंसे हरअेकने आठ-आठ आने दिये और जो दे

सकता था अुसने ज्यादा भी दिये। अिस तरह करीब ३०० रुपये अिकट्ठा किये और ये सब चीजें खरीद लाये।"

अिससे बापू और भी चिढ़े और बोले—"तुम्हारी की हुअी यह सब सजावट अेक क्षणभरमें कुम्हला जायगी। अिससे तो मुझे यही लगता है कि तुम सब मुझे धोखा दे रहे हो। और मेरी हिम्मत पर यह सब ठाटबाट करके तुम कौमी झगड़ेको और बढ़ावा दे रहे हो। क्या तुम नहीं जानते कि मैं तो अिस समय आगकी लपलपाती ज्वालाओंसे घिरा हुआ हूँ! जितने फूलोंके हार पहनाये हैं, अुसके बजाय यदि अितने ही सूतके हार पहनाते तो मुझे रंज न होता। क्योंकि सूतके हारोंसे सजावट भी होती है और बादमें वे कपड़े बनानेके काम आते हैं, वे फिजूल नहीं जाते। मैं समझता हूँ कि अिस गाँवमें पैसे बहुत हैं! नहीं तो अैसे मुश्किल समयमें यों हार-तोरण लगाना तुम्हें नहीं सूझता। अगर अपना प्रेम दिखानेके लिअे यह सब किया हो, तो यह गलत है। अिससे जरा भी प्रेम नहीं प्रकट होता। अगर तुम्हें मुझ पर प्रेम हो, तो मैं कहता हूँ वह करो। अुतना ही मेरे लिअे काफी है। मेरी तो यही समझमें नहीं आता कि अितने कत्लेआमके बाद अितना व्यर्थ खर्च करनेका तुम्हें खयाल ही कैसे आया। और फिर तुम तो कांग्रेसके नामी कार्यकर्ता हो, तुम कहते हो कि तुमने मेरी किताबें पढ़ी हैं, अेम० अे० तक पढ़ाअी की है, जेल भी हो आये हो, खादीकी छोटी-सी धोती पहनते हो! फिर अिस सजावटमें विलायती मीलोंका रेशम और रिबन वगैरा कैसे लगायीं? मैं तो अितना ही कहना चाहता हूँ कि मेरी दृष्टिसे यह सब दुःखदायी है। तुम परसे मुझे अपने सब कार्यकर्ताओंका अन्दाज होता है कि जो कार्यकर्ता अेक दिन लोगोंके सेवकके नामसे पहचाने जाते थे अुन्हें यदि लोग ओहदे पर बिठायेंगे, तो वे यों फूल-हार पहनने-पहनानेके लालचमें तो कहीं गिरने न लगें! मैं देख रहा हूँ कि मैं आज भी छाती ठोककर नहीं कह सकता कि 'कोअी भी मेरे किसी भी कार्यकर्ताकी परीक्षा ले ले। वह सादाका सादा ही मिलेगा!

अुसके पास चाहे कितनी ही मोटरें और बंगले क्यों न हों, वह अपना ध्येय नहीं छोड़ेगा।' लेकिन यह बात नहीं है। अच्छी बात है! आजके किस्सेसे और भी मेरी आँखे खुल गयी हैं, मैं सावधान हो गया हूँ। अिसमें मैं आप लोगोंका दोष नहीं मानता। आप तो जैसे थे वैसे दिखे! अुसमें कोअी क्या करे? लेकिन अिससे अीश्वर मुझे अिस बातका भान कराता है कि मैं कहाँ हूँ। अब भी न जाने क्या क्या देखना बदा है!"

बेचारे कार्यकर्ताओंको क्या पता था कि बापूको अितना दुःख होगा। वे भाअी अपना-सा मुँह लेकर वहाँसे गये और आधे घण्टेमें सब सजावट निकाल डाली। जो जो चीजें काममें ली जा सकती थीं वे ले ली गयीं। हारोंमें जितना तागा काममें लिया गया था, बापूने सबका अेक बण्डल बनानेके लिअे कहा। वह बण्डल काफी बड़ा था। अुसे लोगोंको सीनेके काममें लेनेके लिअे दिया। अुस बण्डलमें करीब करीब १५–२० रील तागा था। अगर बापू अितना न कहते, तो अितना तागा निकम्मा ही चला जाता न? अुसके बादके गाँवोंमें हमेशा हाथकते सूतके हारोंसे बापूका स्वागत किया जाता था। वह सूत करीब पाँच थानोंका अिकट्ठा हुआ था। अुसका कपड़ा बुनवाकर गरीबोंमें बाँट दिया गया। बापू अिस तरह गरीबोंके बेली थे!

१४

कलकत्तेका चमत्कार

गये साल १९४७में जब वर्षोंकी गुलामीके बाद आज़ादीका दिन आनेवाला था, तब हम पूज्य बापूके साथ कलकत्तेमें थे ।

'१५ अगस्तको नोआखालीमें शायद फिर कोअी आग न भड़क अुठे' यह डर नोआखालीके हिन्दुओंपर हावी था । अिसलिअे नोआखाली जानेके लिअे बापू काश्मीरसे कलकत्ता पहुँचे ।

अुस समय कलकत्तेमें हिन्दू-मुसलमानोंका दंगा चल रहा था । अिसलिअे अुस समयके बंगालके प्रधान मंत्री श्री प्रफुल्लचन्द्र घोषने बापूको दो दिन रुक जानेके लिअे विनती की । बापू रुक गये । दंगा तो बढ़ता ही जा रहा था । फिर भी बापूने निश्चय कर लिया था कि १५को नोआखाली पहुँच ही जाना चाहिये । हम सब तैयार भी हो गये । अितनेमें शहीद सुहरावर्दी साहब आ पहुँचे और कहने लगे — "यहाँ जो आग जल रही है, अुसे आपके सिवा कोअी नहीं बुझा सकता । अिसे बुझानेके बाद ही आप नोआखाली जायँ ।" बापूने कहा — "मैं अकेला तो बुझा ही कैसे सकता हूँ ? हाँ, मैं आपके मन्त्रीका काम कर सकता हूँ । लेकिन मैंने तो नोआखाली जानेका वचन दे रखा है, अिसलिअे मुझे वहीं जाना चाहिये । हाँ, अगर आप नोआखालीकी जिम्मेदारी अुठा लें, तो मैं यहाँ ठहरकर अिस आगको बुझानेकी भरसक कोशिश करनेको तैयार हूँ । मगर शर्त यह है कि अुसमें आपको मेरे साथ रहना होगा और फकीर बनना पड़ेगा ।"

सुहरावर्दी साहब कुछ देर विचार करके बोले — "मैं वहाँ आदमी भेजता हूँ और भरसक कोशिश करता हूँ ।"

* बापू अेकदम बोले — "अिस भरसक कोशिशसे काम नहीं चलेगा। जैसे बिहारवालोंने वचन दिया है कि वहाँ कुछ गड़बड़ हो जाय तो मुझे अुपवास करनेका हक है, अुसी तरह नोआखालीमें भी कुछ गड़बड़ हो तो अुसके लिअे भी मुझे अुपवास करनेका हक रहेगा, अिसका खयाल रखकर ही आप जवाब दीजिये।" ये बातें १३ अगस्त, १९४७के दिन हुअीं।

बापूका तरीका कैसा था? नोआखालीके आज तकके हत्याकाण्डके लिअे और आगे जो कुछ भी होगा, अुस सबके लिअे नोआखालीवाले ही जवाबदार माने जायँगे, जब यह बात सामने आयी तो शहीद साहब जरा सोचमें पड़ गये। हालाँकि अुनके लिअे नोआखालीकी जिम्मेदारी लेना कोअी भारी काम न था। क्योंकि नोआखालीके जितने भी जिम्मेदार मुस्लिम भाअी थे, और जिनपर अिलजाम लगे थे, वे सब छूट चुके थे और शहीद साहबकी बात मानते थे। मगर अपना काम निकाल लेनेकी बापूकी तरकीब कैसी थी? जिसने गुनाह किया हो, अुसी पर संरक्षणकी जिम्मेदारी डाल दी जाय! कोअी नौकर घरमें रोज थोड़ी थोड़ी चोरी करता हो, तो बापूजी अैसे थे कि सारा घर ही अुसे सौंप देते और पूरा खतरा अुठाकर कह देते — "सँभाल तू सब।" अिसी तरीकेसे हमारा देश अितना अूँचा अुठा है।

दूसरे दिन शहीद साहब और अुनके साथी आ पहुँचे और सबने कबूल किया — "नोआखालीमें पूर्ण शान्ति रहे अिसकी जिम्मेदारी हमारी है; और आगेके लिअे खयाल हम रखेंगे कि अिसके बाद कभी कुछ भी न हो। मगर आप यहीं रह जाअिये।" बस, कलकत्तेमें बैठकर ही बापूका नोआखालीका काम हो गया। सब मुसलमान भाअी नोआखाली गये और वहाँके हिन्दू भाअियोंको दिलासा दिया कि वे डरे नहीं — साथ ही अपनी पूरी मदद देना भी मंजूर किया। अिधर सुहरावर्दी साहबने बापूके साथ रहना मंजूर किया; और वह यहाँ तक कि खाना-पीना, बैठना-अुठना, सब बापूजीके

साथ ही । अिस तरह तय हुआ कि दोनोंमेंसे कोअी खानगी मुलाकातें भी न ले और अखबारोंके बयान भी साथ ही साथ दें । और १४ अगस्तको दोपहरमें हम बेलियाघाटाके हैदरी मेन्शनमें रहने गये । अिस मोहल्लेमें मुस्लिमभाअी नहीं जा सकते थे ।

मकान अितना गन्दा था कि कुछ हिसाब ही नहीं । अितनी असुविधा तो नोआखालीकी यात्रामें कहीं न हुअी थी । अेक ही कमरा था । अुसमें दर्शनके लिअे हजारों लोग आया करते थे । अेक मिनटके लिअे भी बापूको शान्ति नहीं मिलती थी । जिस दिन हम वहाँ गये, अुस दिन तो कअी हिन्दू नवयुवक बापू पर बड़े गरम हुअे — "आप हिन्दुओंके दुश्मन हैं । दो चार दिनोंमें थोड़ेसे मुसलमान मारे गये, तो आप यहाँ आ बैठे ! अिससे पहले कहाँ गये थे ?"

बापू हँसे और सबको शान्त करते हुअे बोले — "तुम सब जवान हो । लेकिन मेरे सामने बच्चे हो । तुम यहाँ जितने बैठे हो, अुन सबसे तो मेरा छोटा लड़का देवदास भी बड़ा है । तुम यह सब क्यों नहीं समझते कि मैं जन्मसे हिन्दू हूँ, कर्मसे हिन्दू हूँ; क्या मैं हिन्दुओंका दुश्मन बनूँगा ! नोआखाली कौन गया था ! और आज भी जाने ही वाला था । लेकिन मुझे तो तुम्हारी मदद चाहिये । मैं अकेला कुछ नहीं कर सकता । यदि रक्षक बनोगे, तो तुम्हीं बनोगे; और यदि भक्षक बनोगे, तो वह भी तुम्हीं बनोगे । यदि तुम भक्षक बनोगे, तो मैं खुश होअूँगा । मैं तो अब बूढ़ा हो गया हूँ । मुझे कहाँ जीना है ! बहुत सेवा की । यहाँ तो अिसलिअे आया हूँ कि अगर समझा सकूँ तो तुम लोगोंको समझा दूँ । मैं तो दोनोंका सेवक हूँ । मेरे लिअे सब धर्म अेक-से हैं । देखो, नोआखालीकी हमेशाकी शान्तिके लिअे मैंने यहाँ बैठे बैठे व्यवस्था कर ली न ?" अैसा कह कर शहीद साहबके साथकी बात बताअी ।

"रक्षक भी तुम और भक्षक भी तुम", क्या अिस वाक्यसे बापूने भविष्यवाणी की थी ? सचमुच हिन्दू ही अुनके भक्षक बने !

सब युवक शान्त हो गये। फिर तो ये ही लोग शहरमें जाकर शान्तिका संदेशा फैलाने लगे। और आज़ादी मिलनेके आध घण्टे पहले ही — यानी रातके ११-३० बजे ही — जिस कलकत्तेमें हिन्दू मुसलमानको नहीं देख सकता था और मुसलमान हिन्दूको नहीं, वहाँ "हिन्दू-मुस्लिम भाअी-भाअी,' 'हिन्दू-मुस्लिम अेक हों' के नारे आसमान चीरने लगे। लॉरियोंमें हिन्दू-मुस्लिम कन्धेसे कन्धा मिलाकर आने और बापूके दर्शन करने लगे। सारी रात यही हाल रहा। सारी रात बापूजी सो न सके। क्योंकि हिन्दू-मुसलमान भाअी ही नहीं, बहनें और बच्चे भी कन्धेसे कन्धा मिलाकर आते और अपनी आज़ादी दिलानेवाले पिताके दर्शन करके मानो प्रतिज्ञा करते कि 'हमारे अपराध क्षमा कीजिये। अब हम फिर कभी अैसा न करेंगे।' अिस तरहका दृश्य था। भले सारे शहरोंमें रोशनी, जुलूस वगैरा सब अुत्सव हुअे, लेकिन जो कायमी अेकता बापूने आध घण्टेमें पैदा की, अुसके सामने रोशनी कितनी फीकी लगती थी! और अिसके बाद नोआखालीमें आज तक अैसी कोअी महत्वकी घटना नहीं घटी, जिससे यह माना जा सके कि वहाँकी शान्ति भंग हुअी। अेकन्दर देखा जाय तो वहाँ शान्ति ही रही है। वैसे कार्यकर्ता तो वहाँ तब भी थे और अब भी हैं।

१५ अगस्तको बापूजीने हमें अुपवास करनेको कहा था। मैंने पूछा — "बापूजी आज तो आपको हमें मिठाअी खिलानी चाहिये न!" बापू कहने लगे — "तुम जानती हो न कि मैं जन्म, शादी और मौतके प्रसंग पर अुपवास ही करवाता हूँ? अच्छे प्रसंगों पर तो हमेशा ही अुपवास करवाता हूँ। आजसे हमारी जिम्मेदारी कितनी बढ़ रही है? जैसे अेकादशीके अुपवाससे भक्तिकी ओर मन झुकता है, वैसे ही आजके अुपवाससे हमें अपनी जिम्मेदारियोंका भान होगा। हमें आज़ादी दिलानेवाला हथियार चरखा है। अुसे तो हम आज भूल ही कैसे सकते हैं? और मौन भी अिसलिअे कि अीश्वरसे प्रार्थना कर सकें — 'हे भगवान, आजसे तू हमेशा हमें अपनी जिम्मेदारियोंका भान कराते रहना, जिससे

सत्ता मिलनेके बाद हम मौजशौकमें न पड़ जायँ।' अुसी तरह हमें किसी तरहका घमण्ड भी न होना चाहिये। आजसे हम सबको और भी नम्र बनना चाहिये।"

अुस समय बापूका चेहरा गम्भीर था। अुन्होंने आधे घण्टेमें जहर भरी हवाको अमृतमयी कर दी थी। फिर भी अुनके चेहरे पर अिसका चिह्न तक न था कि अुन्होंने कुछ किया है। कोअी अुनका अभिनन्दन करता तो वे कहते थे — "अकेला आदमी क्या कर सकता है? मुझे मुबारकबाद किस बातका दे रहे हैं? आप सबने मदद की, तभी यह बन पाया है।"

अुस दिन हम सबने और बापूने अुपवास किया था और कताअीका कार्यक्रम रखा था। बंगालके सब मन्त्री बापूको प्रणाम करने आये थे। अुन सबसे बापूने कहा — "देखिये आप सब आजसे काँटोंका ताज पहन रहे हैं। जितनी सादगीसे आप लोग रहे हैं, अुतनी ही सादगी आगे भी रखिये। सत्ताकी कुर्सी बड़ी बुरी होती है। जरा भी गर्व न करना, मौजशौकमें न फँसना। आप लोगोंको तो जनताके सामने सादगीका, नम्रताका, अहिंसाका, सहनशीलताका आदर्श पेश करना है। देहातोंका अुद्धार करना है, गरीबोंका अुद्धार करना है। सत्यको कभी न छोड़ना। आपकी सच्ची परीक्षा आजसे होगी। अंग्रेजोंके राजमें तो अेक तरहसे परीक्षा थी ही नहीं। आजसे तो परीक्षा ही परीक्षा है। और अुसमें अीश्वर आपको सफल करे!"

सन १९४७ की १५ अगस्तको शुक्रवार था। अेक सालके बाद हमें अैसी सीख देनेके लिअे बापू हमारे बीच क्यों न रहे! वे तो अपना काम पूरा करके अपनी भविष्यवाणीके अनुसार ही शुक्रवारके दिन हिन्दूका भक्ष्य बने। अपने अिस पापका प्रायश्चित्त हम बापूके अुस दिन कहे हुअे शब्दोंको याद करके करें। अीश्वर हमें बापूके रास्ते पर चलनेकी शक्ति दे!

१५

बापूके जन्मदिन

'बापूके जन्मदिन' शब्द मैंने जान-बूझकर बहुवचनमें लिखा है। तारीखके हिसाबसे बापूका जन्मदिन २ अक्तूबरको और तिथिके हिसाबसे भादों वदी १२ को आता है। सन '४७ में तारीखके हिसाबसे अुनका जन्मदिन पहले आया था।

आज वे जन्मदिन तो बापूके बिना अन्धकारमय आये हैं। गये साल आज बापूने भविष्यवाणी की थी कि "अगली चरखा द्वादशी को या तो मैं न रहूँगा, अथवा हिन्दुस्तान बदल चुका होगा।" लेकिन कौन जानता था कि बापूकी यह भविष्यवाणी सही होगी!

बिड़ला हाअुस,
गुरुवार, ता० २-१०-'४७

३-३० बजे प्रार्थनाके लिअे अुठे। हम अुठे ही थे कि वहीं घरके कअी लोग प्रार्थनाके लिअे आ पहुँचे। हम सबने मुँह वगैरा धोकर बारी बारीसे बापूके पैर छुये। मैंने हँसते हुअे बापूसे कहा — "यह कहाँका न्याय! हमारे जन्मदिन पर तो हम सबके पैर छूते हैं और आपके जन्मदिन पर अुलटे हमें आपके पैर छूना पड़ रहे हैं!" बापू बोले — "हाँ, महात्माओंके लिअे हमेशा अुलटा ही नियम रहता है। तुम सबने मुझे महात्मा बना दिया है न! फिर मैं झूठा महात्मा ही क्यों न होअूँ!' लेकिन हमारा कायदा यह है 'महात्मा' शब्द आया कि सब हो गया। अुसका सच्चा-झूठापन देखनेकी जरूरत नहीं।

अिन दिनों बापूको सर्दी, बुखार, खाँसी वगैरा रहता था। खाँसी तो अितनी आती थी कि देखनेवालेको दुःख होता था। फिर भी बापू

प्रार्थनाके बाद नहीं सोये। रोजकी डाक और 'हरिजन' पत्रोंके लेख लिखने बैठ गये।

बापूकी खाँसी मुद्दती थी। तीन हफ्तेकी मुद्दत पूरी किये बगैर जानेवाली न थी। लेकिन फिर भी दर्द कुछ कम हो, अिसलिअे डॉक्टरोंने पेनिसिलिन लेनेकी सलाह दी थी। अिस पर बड़ी रिकझिक चली। बापू कहते — "मेरा रामनाम कहाँ गया? अगर रामनाम दिलमें अुतर जाय, तो अुसमें अितनी ताकत है कि खाँसी कल चली जाय। और अगर तीन हफ्ते रही, तो मैं सारे संसारसे कहनेके लिअे तैयार हूँ कि मेरा रामनाम झूठा है।" डॉक्टर कहते — "वह सब ठीक है, लेकिन विज्ञानने अितनी खोज की है, अुसे आप गलत कैसे कह सकते है? आप चाहे जितने दिलसे रामनाम लेनेवाले लाअिये, मैं अुनमें कॉलेरा फैला सकता हूँ।"

बापूने कहा — "यह अुद्दण्डता है। विज्ञानको अभी बहुत खोज करना बाकी है। अभी तो सिर्फ अुसकी शुरूआत ही हुअी है। लेकिन रामनाम अगर श्रद्धासे लिया जाता हो तो, दुनियामें कोअी बीमार पड़ ही नहीं सकता। अितने स्वच्छ, निष्पाप दुनियाके लोग बन जायँ, तो मुझे यकीन है कि किसीको कोअी बीमारी ही न हो। लेकिन आप सब भूल कर रहे हैं। कल आप अगर मुझे लिवर खिलायें या लिवर अेक्सट्रैक्टका अिन्जेक्शन दें, तो क्या मुझे विदेशकी बनी हुअी चीजें लेना चाहिये? हिन्दुस्तान बड़ा आलसी देश है, और अुसमें भी डॉक्टर लोग तो सबसे ज्यादा आलसी हैं; क्योंकि वे अपने देशमें कुछ नहीं बना सकते। अुन्हें विदेशोंकी बनी हुअी चीजोंमें ही विश्वास है। कितनी दयाजनक हालत है यह! हिन्दुस्तान क्या भिखारी देश है? जहाँ कुदरत तो सब कुछ देती है, फिर भी हमें भीख माँगना पड़ती है! सचमुच, अिन सब बातोंका जब खयाल करता हूँ, तो मुझे बहुत ही दुःख होता है। जब हिन्दुस्तानके नसीब खुलना होंगे तब खुलेंगे। अभी क्या कहा जा सकता है! मैंने तो बहुत किया। अब कुछ करनेकी अिच्छा नहीं होती। अब तो जी चाहता है कि अिस दुनियासे चला जाअूँ और वह भी राम

रा . . . म करते हुअे। रामनाममें कितना रहस्य भरा है, यह मैं आप लोगोंको समझा नहीं सकता। मुझमें कुशलता नहीं है। आज तो मैं आँवाँमें बैठा हूँ। चारों ओर आग जल रही है। आप डॉक्टर लोग जैसे विज्ञानकी खोज करते हैं, वैसे ही मैं रामनामकी खोज करता हूँ। अगर खोज सका तो ठीक है, नहीं तो खोजते खोजते मर जाअूँगा। आप सब आज मुझे २ अक्तूबरके निमित्त प्रणाम करनेके लिअे आये हैं, और मुझे समझा रहे हैं, यह तो आपके प्रेमकी निशानी है। लेकिन अब मैं तो चाहता हूँ कि या तो अगली चरखाबारस पर मैं यह आग देखनेके लिअे जिन्दा न होअूँगा या हिन्दुस्तान बदल गया होगा। अिसलिअे मेरी लम्बी अुम्रके लिअे प्रार्थना करनेके बजाय, मैं जैसी प्रार्थना करता हूँ वैसी ही प्रार्थना आप कीजिये।"

सन १९४७ को २ अक्तूबरके दिन सुबह ५॥ बजे बापूने ये शब्द कहे थे।

हम लोगोंमें मान्यता है कि नये वर्षमें या किसी मंगल कार्यमें अशुभ न बोलना चाहिये, किसी पर गुस्सा न करना चाहिये या रोना नहीं चाहिये। मेरी डायरीमें जब बापूके ये शब्द पढ़ती हूँ, तब मुझे भास होता है कि अिस मान्यतामें कुछ तो सचाअी है ही। रामनामको खोजनेवाले बापू रामनाम खोजते खोजते ही चले गये!

७ बजे हम बापूके साथ घूमने गये। हम घूम रहे थे, अुसी समय अेक अंग्रेज भाअीने बापूकी फोटू खींचनेकी कोशिश की। यह देखकर बापू नाराज हो गये। यों भी बापूको फोटू खींचनेवाले बहुत तंग करते थे। अिसलिअे अुनसे बापूको कुछ चिढ़ थी। बापू कहने लगे — "आज तो खास करके अीश्वरका नाम लेना चाहिये। अुसके बदले यह हो रहा है!"

अितनेमें कृपलानीजी, सुचेताबहन, वगैरा बहुतसे लोग बापूको प्रणाम करने आये। हम सबने अुपवास किया था। बापूजीने भी। मैंने पूछा — "बापू, आप क्यों अुपवास करते हैं?" बापू कहने लगे — "आज

तो कहा जा सकता है कि चरखेका जन्म हुआ है। यह तो परोपकारी देव है। अुसके जन्मदिन पर अुपवास करके और पवित्र होकर हम बार बार प्रार्थना करें कि 'हे चरखा देव, अपनी शरणमें रखना।' अिसी प्रार्थनाके लिअे मैंने अुपवास किया है। अिसलिअे नहीं कि मेरा जन्म-दिन है और अुसे मैं महत्वका समझ रहा हूँ।"

घूमनेके बाद स्नान वगैरा रोजके कामसे बापू ८-३० बजे फारिग हुअे। मीराबहनने बापूकी बैठकके सामने फूलोंसे कलामय ढंगसे 'ॐ, हे राम', और क्रॉस बनाया था। हम सबने बापूको सूतके हार पहनाये और पैर छूये। फिर छोटीसी प्रार्थना की। प्रार्थनाके समय जवाहरलालजी, अिन्दिरा गांधी, घनश्यामदासजी बिड़ला और अुनका कुटुम्ब, कन्हैयालाल मुनशी, सी० अेच० भाभा, डॉ० जीवराज मेहता, सरदार वल्लभभाअी पटेल, वगैरा कअी आदमियोंसे कमरा भर गया था। सब धर्मोंकी प्रार्थना करनेके बाद सब चले गये। और अिधर बापूकी खाँसी शुरू हुअी।

अेक भाअी कहने लगे — "बापूजी, आपकी खाँसी अभी नहीं मिटी।" बापूने जवाब दिया — "राम होगा, तो मिटेगी। नहीं तो मुझे अिस खाँसीके साथ जाना अच्छा लगेगा। अब मैं १२५ साल जीना नहीं चाहता। आपको भी आज यही प्रार्थना करनी चाहिये कि 'हे भगवान्, या तो अिस बूढ़ेको अिस दावानलमेंसे अुठा ले, या फिर हिन्दुस्तानको अच्छी बुद्धि दे।' मैं अंग्रेजोंके साथकी अितनी लड़ाअियोंमें कभी निराश न हुआ था। लेकिन घरकी बातें किसे कहूँ? भाअी भाअीको मारना चाहता है। यह देखनेके लिअे मैं जीना नहीं चाहता।"

ये सब लोग १० बजे गये थे। फिर भी बापूको प्रणाम करनेके लिअे और ज्यादा लोग आते रहे। काकासाहब गाडगील, देवदास गांधी और अुनका कुटुम्ब, भटनागर, सर दातारसिंह, आर्थर मूर, षण्मुखम् चेट्टी आये। अिनके बाद ११-४०को सरदार पटेल, मणिबहन, और गणेश दत्त, प्रो० अब्दुल मजीद, बर्माके हाअी कमिश्नर अेच० अेल० अे० आँग, और चीनके हाअी कमिश्नर डॉ० अेम० आँग सू आये। वे अपने अपने

प्रधानमंत्रियोंके खत और फल लेकर आये थे। अिन सबसे मिलते-जुलते मुश्किलसे १२–३० को बापूको आराम लेनेका समय मिला। पन्द्रह मिनट ही सोने पाये होंगे कि फिर दर्शन करनेवालोंका ताँता लगा। २ से ३ तक अेक घण्टा सामूहिक कताअी हुअी। ४–१०को लेडी माअुण्टबैटन आयीं और ४–३५को लौटीं। अुनके जानेके बाद भी हुमायूं कबीर, श्रीधराणी और फ्रांसके मों० लोजियर और अुनकी पत्नी आये। देश परदेशसे करीब हजारसे भी ज्यादा तार आये थे। बापूजीके पैरोंके पास तो रुपयोंका ढेर हो गया था। कअी बहनें अपना जेवर भी दे गयी थीं।

२ अक्टूबरका दिन बड़े आनन्दसे बीता। रातको रेडियो पर सुन्दर कार्यक्रम था। मैंने बापूसे कहा — "आज तो आप रेडियो सुनिये!" बापूने कहा — "अुसमें क्या सुनना? ये रेडियोके भजन सुननेके बजाय चरखेका संगीत न सुनें?"

चरखा जयन्ति — भादों वदी बारस — के दिन दिल्लीके गुजराती भाअियोंने अेक चन्दा अिकट्ठा किया था। बापूकी तबीयत अच्छी न थी। अिसलिअे सरदार वल्लभभाअी कहने लगे — "अितनी सख्त खाँसी आती है, तब फिर गुजरातियोंकी मीटिंगमें जाना क्यों मंजूर किया? पर आप तो अितने लालची हैं कि जहाँ सुना कि फलाँ जगह पैसे मिलेंगे तो मरने पड़े हों तो भी वहाँ जायेंगे। अैसे फण्ड-वण्ड तो होते ही रहेंगे। यों ठों-ठों करते जानेकी क्या जरूरत है? पर मैं जानता हूँ कि आप मेरी बात नहीं मानेंगे।" खूब ही हँसी अुड़ी। बापू और सरदारका अैसा ही मीठा सम्बन्ध था।

फिर, जब मीटिंगमें सरदारको कुछ बोलनेका कहा, तो वहाँ भी मजा आया। सरदार बोले — "आज मेरा थोड़ा ही जन्मदिन है? आप लोग पैसा अिकट्ठा करके दे तो अिन महात्माको रहे हैं और बोलूँ मैं? मगर बापू तो बनिये हैं और बनिये लोग बड़े लोभी होते हैं। देखिये अितनी खाँसी और कमजोरीमें भी आप लोगोंको ठगनेकी

ताकत अुनमें आ ही गअी (खूब ही हँसी अुड़ी)। लेकिन अब मेरी अितनी ही प्रार्थना है कि अिन्हें आराम करने दीजिये।"

बापूने चरखेको और भी ज्यादा गति देनेके लिअे याद दिलाअी।

जितने चमकते हुअे तेजमें अुस सालके जन्मदिन मनाये गये, अुतने ही अन्धेरेमें अबके जन्मदिन मनाये जायँगे। पर अन्धेरेमें भी दियेकी ज्योति जैसे बहुत अुजेला देती है और अुसमें हम सन्तोष मानते हैं, अुसी तरह अगर हम बापूके संस्मरण बार बार याद करें, अुनके रास्ते पर चलें, तो वे हमें अुजेला देंगे ही और अुसीसे हमें सन्तोष मानना होगा।

'अीश्वर अल्ला तेरे नाम, सबको सन्मति दे भगवान' — आज हम यह अुनकी रोजकी प्यारी प्रार्थना करें और अुन्हें प्रणाम करें।

बापूने पिछली चरखा जयन्ति पर हमें 'या तो हिन्दुस्तान शुद्ध बने या मैं न रहूँ,' यह प्रार्थना करनेके लिअे कहा था। हम वही प्रार्थना करके अीश्वर और बापूसे कहें कि 'हमें सच्ची राह दिखाओ और हमारे पापोंकी ओर न देखो!'